राष्ट्रीय छात्रशक्ति

वर्ष 45 ■ अंक 05 ■ अगस्त 2023 ■ ₹10 ■ पृष्ठ 36

स्मृतिशेष मदन जी

राष्ट्रीय विद्यार्थी दिवस की झलकियां

राष्ट्रीय
छात्रशक्ति
शिक्षा–क्षेत्र की प्रतिनिधि–पत्रिका

वर्ष 45, अंक 05
अगस्त 2023

संपादक
आशुतोष भटनागर
संपादक–मण्डल :
संजीव कुमार सिन्हा
अवनीश सिंह
अभिषेक रंजन
अजीत कुमार सिंह

संपादकीय पत्राचार :
राष्ट्रीय छात्रशक्ति
26, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग,
नयी दिल्ली - 110002.
फोन : 011-23216298
www.chhatrashakti.in
rashtriyachhatrashakti@gmail.com
www.facebook.com/Rchhatrashakti
www.twitter.com/Rchhatrashakti
www.instagram.com/ Rchhatrashakti

स्वामी, अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक **राजकुमार शर्मा** द्वारा 26, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, आई.टी.ओ. के निकट, नयी दिल्ली - 110002 से प्रकाशित एवं ओशियन ट्रेडिंग कं., 132 एफ. आई. ई., पटपड़गंज इण्डस्ट्रियल एरिया, नयी दिल्ली-110092 से मुद्रित। **संपादक** *पीआरबी अधिनियम के तहत समाचारों के चयन के लिए जिम्मेवार।

अबकी बार

05

अपने मदन जी...

देश की राजधानी दिल्ली स्थित जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम के निकट बने भारोत्तोलन ऑडिटोरियम के बाहर भीड़ लगातार बढ़ रही थी। भीड़ में मौजूद हर कोई जल्द से जल्द...

संपादकीय	04
Madan Das ji: Imprints of an Organisational Genius	14
ABVP protested in Siliguri against disrobing and assault of two women in Malda	16
'1.91 lakh vacancies in Telangana must be filled soon: ABVP.'	17
बिंदी लगाने की सजा मौत अभाविप ने किया विरोध प्रदर्शन	20
भारतीय भाषाओं में शिक्षा ग्रहण कर सकेंगे विद्यार्थी	22
प्रकृति का प्रत्युत्तर हैं मानव प्रेरित प्राकृतिक आपदाएं	23
ABVP holds massive Protest against Udupi College Washroom Video Controversy	25
हिंसा पीड़ितों के बीच उम्मीद की किरण बन उभरे अभाविप कार्यकर्ता	26
फ़ीस वृद्धि के विरोध में अभाविप ने किया केन्द्रीय विश्वविद्यालय बिलासपुर में चक्का जाम	27
कुत्सित राजनीति की भेंट चढ़ी महिला सुरक्षा	28
कठोर कार्रवाई करे सरकार : अभाविप	29
विश्वविद्यालय छात्र संघ चुनाव के लिए केंद्रीय चुनाव समिति का गठन	30
दरभंगा में सर्जना निखार शिविर का आयोजन	31
"मेरी माटी–मेरा देश"	32
वैदिककालीन साहिबी नदी को पुनर्जीवित करने में जुटा शोध आयाम	33
राष्ट्रीय विद्यार्थी दिवस पर विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन	34

वैधानिक सूचना : राष्ट्रीय छात्रशक्ति में प्रकाशित लेख एवं विचार तथा रचनाओं में व्यक्त दृष्टिकोण संबंधित लेखकों के हैं। संपादक, प्रकाशक एवं मुद्रक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। समस्त प्रकार के विवादों का न्यायिक क्षेत्र दिल्ली होगा।

संपादकीय

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद की स्थापना दिवस के कार्यक्रम देश भर में अत्यंत उत्साह से मनाए गए। स्थापना के 75 वर्ष अर्थात अमृतकाल के प्रारंभ का यह अवसर न केवल वर्तमान टोली अपितु पूर्व कार्यकर्ताओं के बीच भी उत्साह का कारण बना है।

गत 75 वर्षों में कार्यकर्ताओं की अनेक पीढ़ियां गुजरी हैं जिन्होंने यथाशक्ति संगठन के काम को आगे बढ़ाया। यह परिषद की कार्यकर्ता विकास की अनूठी प्रक्रिया है जो कार्यकर्ता को अपने कार्यशील दिनों में संगठन कौशल और नेतृत्व के गुणों से पूरित करती है, वहीं दायित्व से हटने के दशकों बाद भी उसे संगठन के साथ आत्मीय संबंध में जोड़े रखती है। इसके पीछे परिषद के वरिष्ठ कार्यकर्ताओं का स्नेहपूर्ण व्यवहार तथा शुद्ध सात्विक प्रेम ही है। इस स्नेहसंबंध ने ही उन्हें लाखों कार्यकर्ताओं का स्वाभाविक संरक्षक और अभिभावक बना दिया। जैसे कोई कुम्भकार अपने मिट्टी के बर्तन को बनाते समय जहां संभालना होता है वहां संभालता है और जहां ठीक करने के लिये थपकी देनी होती है वहां थपकी देता है, वैसे ही इन वरिष्ठ कार्यकर्ताओं ने युवा छात्रों को गढ़ा है।

प्रवाहमान छात्रों के बीच काम करने वाले संगठन का स्थायी स्वरूप गढ़ने का काम प्रा. यशवंतराव केलकर, प्रा. बाल आपटे और मा. मदनदास जी ने तीन दशक से अधिक तक किया। यह त्रयी मानो संगठन की जीवंतता का पर्याय ही थी। किन्तु काल की गति से कोई भी नहीं बच सकता। इस त्रयी के अंतिम नक्षत्र मा. मदनदास जी ने 24 जुलाई 2023 को अपनी जीवन यात्रा पूरी की।

मा. मदनदास जी का स्वभाव ऐसा था कि प्रत्येक कार्यकर्ता को लगता था कि वह उनके सबसे अधिक निकट है। वस्तुत: वे सभी के प्रति समान आत्मीय थे। कार्यकर्ताओं की तीन पीढ़ियां तो यशवंतराव जी और आपटे जी के जाने के बाद उन्हें ही अपना सम्बल मानती थीं।

स्वाभाविक ही उनके लिये 'अपने मदन जी' का जाना व्यक्तिगत रूप से अपूर्णीय क्षति है। जहां तक संगठन की प्रगति का सवाल है, उनकी स्मृति से प्रेरणा लेकर वह निरंतर वर्धमान रहेगा, यह विश्वास है। हां, यह विश्वास भी उस अद्वितीय कार्यपद्धति के कारण ही है जिसके पीछे इन महापुरुषों की सुदीर्घ साधना है। उनका स्पर्श पाकर असंख्य कार्यकर्ता समाज जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में सक्रिय हुए आज अपने–अपने क्षेत्र में शीर्ष पर हैं।

मा. मदनदास जी के प्रति सश्रद्ध,

आपका
संपादक

अपने मदन जी...

| संजय दीक्षित |

देश की राजधानी दिल्ली स्थित जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम के निकट बने भारोत्तोलन ऑडिटोरियम के बाहर भीड़ लगातार बढ़ रही थी। भीड़ में मौजूद हर कोई जल्द से जल्द ऑडिटोरियम के अंदर जाना चाहता था। सभी चाहते थे कि बस, उसे सबसे पहले प्रवेश मिल जाए और वह ऑडिटोरियम में होने वाली श्रद्धांजलि सभा में पहुंच कर "अपने मदन जी" को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित कर सके। भीड़ के बीच में सुरक्षाकर्मी अपने कार्य में जुटे थे। सघन सुरक्षा जांच के बाद ही किसी को अंदर जाने दिया जा रहा था। अभी शाम का चार ही बजा था, लेकिन ऑडिटोरियम पूरी तरह भर चुका था। इसके बावजूद लोगों की संख्या बढ़ती जा रही थी। इनमें से अधिकतर वह लोग थे, जो किसी ने किसी रूप में महान चिंतक एवं विचारक मदनदास देवी जी से जुड़े हुए थे। परन्तु "मदन जी" अब न तो साथ में थे और न ही "मदन जी" से अब किसी तरह का संवाद किया जा सकता था। चेहरे पर दुःख के भाव और नम आंखों के साथ कोई भी यह स्वीकार करने का साहस नहीं कर पा रहा था कि मदन जी अब दुनिया में नहीं हैं।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के पूर्व सह-सरकार्यवाह एवं अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के पूर्व राष्ट्रीय संगठन मंत्री मदनदास देवी जी गत 24 जुलाई को सभी लोगों को छोड़कर चले गए। लम्बी बीमारी के बाद मदन दास देवी का बेंगलुरु में 81 वर्ष की आयु में निधन हो गया। उनके निधन का समाचार पूरे देश में हजारों लोगों के लिए दुःख और शोक का कारण बन गया। अंतिम संस्कार के बाद राजधानी दिल्ली में गत 31 जुलाई को एक श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया, जिसमें सैकड़ों लोगों ने हिस्सा लिया। भारोत्तोलन ऑडिटोरियम में आयोजित श्रद्धांजलि सभा में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के पदाधिकारी, भाजपा एवं अन्य संगठन से जुड़े गणमान्य लोगों के साथ ही बड़ी

विछोह का दुःख होता है। किसी भी आत्मीय के जाने पर दुःख का अनुभव होता है और हम भी इस दुःख का अनुभव करते हैं क्योंकि जो अपना है, उसका तो दुःख होगा ही। लेकिन मदन दास जी ने हजारों लोगों को अपने अपनत्व से बांधा, इसलिए उनका दुःख सर्वव्यापी है। मदन दास जी के जाने से जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में काम करने ऐसे बड़ी संख्या में लोग हैं, जो दुःख का अनुभव कर रहे हैं। यह स्वाभाविक है क्योंकि उन्होंने कार्य को बढ़ाया, विस्तार किया। उन्होंने मनुष्यों को केवल संगठन से जोड़ने का कार्य ही नहीं किया, बल्कि जो उनसे जुड़ा, उसको उन्होंने अपना मित्र बनाया, स्वयंसेवक बनाया और उसे ऐसी प्रेरणा दी, जिससे वह कहीं न कहीं सक्रिय रहे। वह सभी कार्यकर्ताओं की चिंता एक मनुष्य की तरह करते थे। जिस-जिस को उनका स्नेह मिला, उसे आज भी इसका महत्व पता है। वह संगठन कार्य भी स्नेह के साथ करते थे और जीवन को हमेशा एक उचित दिशा देते रहे। अपनेपन के साथ सबको समान महत्व देना, उनकी विशेषता थी। उन्होंने कभी भी किसी के लिए अपने मन में कोई धारणा नहीं बनाई और उनके व्यक्तित्व से सभी को बहुत कुछ सीखने को मिला। यशवंत राव केलकर उनके अनुकरणीय आदर्श थे और उनका जुड़ाव उनसे बहुत ज्यादा था एवं उन्होंने बहुत कुछ उनसे सीखा था। केलकर जी के जाने के बाद उनकी बातों में और अधिक जोड़ कर अनुभव के साथ अपने आप को बढ़ाया। स्नेह व्यक्ति की सुरक्षा करता है और मोह आदमी को बिगाड़ देता है। यह मदनदास जी जानते थे और इसी के अनुरूप उन्होंने अपने जीवन को ढाला। उनकी जगह कोई और नहीं ले सकता है। वह अंतिम क्षण तक आनंदित थे और सतत आगे बढ़ना, उनकी प्रकृति थी। उन्होंने जो सिखाया है, उसे लेकर हम आगे बढ़ेंगे और यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

मोहन भागवत
सरसंघचालक, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

संख्या में वह सभी उपस्थित थे, जिन्हें अपने जीवन में किसी न किसी रूप में "मदन जी" से जुड़ने का मौका मिला था। सभी की आंखें नम थी और चेहरे पर दुःख का भाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता था।

श्रद्धांजलि सभा में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरकार्यवाह दत्तात्रेय होसबले, सह-सरकार्यवाह कृष्ण गोपाल, अरुण कुमार, पूर्व उपराष्ट्रपति वैंकेया नायडू, भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा, केन्द्रीय मंत्री राजनाथ सिंह, नितिन गडकरी, धर्मेंद्र प्रधान, पीयूष गोयल, अनुराग ठाकुर, भाजपा नेता भगत सिंह कोश्यारी, डॉ. हर्षवर्धन, रविशंकर, कैलाश विजयवर्गीय, प्रज्ञा ठाकुर, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र के अध्यक्ष राम बहादुर राय, विकास भारती के सचिव पद्मश्री अशोक भगत, अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के राष्ट्रीय संगठन मंत्री आशीष चौहान सहित सैकड़ों की संख्या में लोगों ने हिस्सा लिया।

श्रद्धांजलि सभा का प्रारम्भ स्वर्गीय मदनदास देवी पर केंद्रित लघु चलचित्र से हुआ, जिसमें उनके जीवन के महत्वपूर्ण क्षणों, घटनाओं एवं कार्यों से जुडी जानकारियों को प्रदर्शित किया गया। तत्पश्चात संस्कार भारती से सबंधित डॉ. अवनीश त्यागी और

मदन जी के अंदर कुछ विशेष ही था। विजन और मिशन के प्रति मदन जी की दृष्टि स्पष्ट थी। मदन जी से कई सूत्र मिले, जिससे मैंने अपने भविष्य का निर्माण किया। क्या अच्छा है और क्या करना चाहिए? यह उन्हीं से ही सीखा। वह एक महान नेता थे और उनका मार्गदर्शन लगातार हमें प्राप्त होता रहा। अपने जीवनकाल में मदन जी ने हजारों लोगों को शिक्षा दी। वह महान देश के महान सपूत थे। उनके विचार स्पष्ट थे। उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि देने के साथ ही ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि उन्हें शांति मिले।

वेंकैया नायडू
पूर्व उप राष्ट्रपति

उनकी टीम ने कई भजनों के गायन के माध्यम से मदन दास जी को अपनी श्रद्धांजलि दी। श्रद्धांजलि सभा में स्वर्गीय मदनदास जी को सबसे पहले जैन परंपरा में, तत्पश्चात बौद्ध और फिर सिख परंपरा के अनुसार श्रद्धांजलि दी गई। तत्पश्चात सभा में उपस्थित राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरकार्यवाह दत्तात्रेय होसबले ने उन्हें श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए स्वर्गीय मदन दास देवी से जुड़े अपने अनुभवों को सामने रखा।

उन्होंने कहा कि मदनदास जी के निधन से असंख्य लोगों ने जिस वेदना का अनुभव किया है, मैं भी उनमें से एक हूं। वह मनुष्य निर्माण व संगठन निर्माण के अद्भुत शिल्पकार थे और मनुष्यों को परखने की अद्भुत क्षमता, उनका विशेष गुण था। उनके निधन से असंख्य लोगों को अनाथ होने का अनुभव हुआ है और वैसा ही मैं स्वयं महसूस कर रहा हूं। 1972 से लेकर अपने जीवन के अंतिम दिन तक अर्थात पचास वर्षों तक हम सभी को मदन जी का मार्गदर्शन मिला। उन्होंने ही हमें यह बताया कि किसी मनुष्य के कार्य न करने पर उससे घृणा करना उचित नहीं, बल्कि ऐसे लोगों को प्रेम और स्नेह देना हमारा कर्तव्य है।

अपने अनुभवों को साझा करते हुए सरकार्यवाह

मदन दास जी से 42 वर्ष तक सम्बन्ध रहे। उनका आग्रह कार्यकर्ता की मानसिकता एवं मानसिक रचना पर ही होता था। उनका चिंतन भारतीय स्तर का था, लेकिन कर्म के विषय पर वह स्थानीय स्तर पर कार्य करने का आग्रह करते थे। वह हमेशा कार्यपद्धति का पालन करने के लिए कहते थे। अनुशासन के लिए भी उनका आग्रह होता था। वह बहुत संवेदनशील थे। भारतीय मजदूर संघ के वह पालक अधिकारी रहे और उन्होंने मजदूर संघ को एक नयी दृष्टि प्रदान की। आज यह स्वीकार नहीं कर पा रहा हूं कि वह अब हमारे बीच नहीं हैं।

बी. सुरेंद्रन
संगठन मंत्री,
भारतीय मजदूर संघ

यह प्रकृति का शाश्वत सत्य है कि जो आज है, वह कल नहीं होगा। मदन दास जी के निधन की जानकारी जब मिली, उस समय कई लोग मौजूद थे, सभी के मुंह से सिर्फ ओह शब्द ही निकला। लगभग छह दशक तक उन्होंने संघ के प्रचारक के रूप में एक सार्थक भूमिका निभाई। वह राष्ट्रीय विचारधारा के चिंतक थे और समाजसेवा में उनकी उल्लेखनीय भूमिका रही। उन्हें सीए की शिक्षा में गोल्ड मैडल मिला था, लेकिन उन्होंने परिवार के स्थान पर समाज के लिए कार्य करने का संकल्प लिया और फिर संघ के माध्यम से उन्होंने समाज की सेवा में अपना जीवन न्यौछावर कर दिया। उन्होंने अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के लिए 22 वर्ष तक कार्य किया। उनकी अपेक्षा हर कार्यकर्ता से कुछ जानने की रहती थी और उनके स्नेह से हर कार्यकर्ता परिचित था। उनके न रहने से अपूरणीय क्षति हुई है और प्रकृति भी उस क्षति की पूर्ति नहीं कर सकती है। अपने जीवन में, अपनी कृतियों में जो पुंज उन्होंने पल्लवित किया, वह हमेशा साथ रहेगा।

राजनाथ सिंह
रक्षा मंत्री,
भारत सरकार

मदन दास जी को स्वर्गीय कहने की हिम्मत नहीं हैं। वह एक वैक्यूम छोड़ गए हैं। कार्यकर्ताओं के लिए वह मार्गदर्शक, मित्र, अभिभावक थे। अभी पंद्रह दिन पूर्व ही उनसे मुलाकात हुई थी। दीन दयाल शोध संस्थान को एक लम्बे समय तक उनका साथ मिला था। मैंने जीवन की बैलेंस शीट बनाना, उन्हीं से सीखा।

अतुल जैन
प्रधान सचिव,
दीनदयाल शोध संस्थान

जगत प्रकाश नड्डा
राष्ट्रीय अध्यक्ष,
भाजपा

मदन जी को श्रद्धांजलि देने के लिए जिस तरह से तीन पीढ़ी के कार्यकर्ता आए हैं, यह मदन जी के व्यक्तित्व, कृतित्व, त्याग और तपस्या को दर्शाता है। एक व्यक्ति अपनी लम्बी परछाई छोड़ता है, तो यह उसके व्यक्तित्व से होता है। वह सभी के लिए सरल, सहज और कोमल थे, तो अपने लिए कठोर थे। उन्होंने जिस समय छात्रों के लिए काम किया, वह प्रतिकूल समय था। आपातकाल में जीवंत संगठन को बढ़ाना, उनकी खूबी थी। व्यक्ति की ताकत और सीमा को वह पहचानते थे और उसी के अनुकूल कार्य देते थे। सामूहिकता में अनामिकता का ज्ञान उन्हीं से ही मिला। सर्वसम्मति के लिए वह अंतिम पड़ाव तक जाते थे और कहते थे कि स्वाभाविक रूप से निर्णय के लिए प्रतीक्षा करनी चाहिए। उन्होंने संगठन को कई सूत्र दिए। कार्यकर्ताओं से संवाद करना, संवाद में शामिल करना और फिर संवाद से निर्णय को निकालना, उन्हीं से ही सीखा। उन्होंने छोटी-छोटी बातों से सिखाया और उनकी तीन दशक की मेहनत व योगदान का ही परिणाम है कि विद्यार्थी परिषद विश्व का सबसे बड़ा संगठन बना। उन्होंने संघ के दायित्व से जुडी कई जिम्मेदारियों का निर्वहन किया और सतत जीवन संघर्ष रखना, उनकी विशेषता रही। हम सब उनके बताए रास्ते पर चले, यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

दत्तात्रेय होसबले ने बताया कि उन्हें मदन जी के साथ अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद में काम करने का अवसर मिला। उनके साथ काम करने के दौरान उन्हें बहुत कुछ सीखने को मिला। मदन जी ने विश्व विभाग के पालक अधिकारी के रूप में अपनी कार्यप्रक्रिया की छाप विदेशों में छोड़ी और बाद में यह दायित्व उन्हें मिला। उन्होंने कहा कि मदन जी सभी को स्नेह देते थे, लेकिन गलती होने पर वह कड़ाई के साथ उसे बताते भी थे। उनका शब्दों का चयन ऐसा होता था, जिससे कोई गलत रास्ते पर न जाने पाए। यह मदन जी की विशेषता थी कि वह मनुष्य को परख कर उसके गुण को देखते थे, न कि दोष को। गुण और दोष को कहां और किस तरह बताना है? यह उनकी विशेषता रही। वह संगठन के आधारभूत तत्व को जानते थे और मनुष्यों को देखने की कला, उन्होंने ही हमें सिखाई।

सरकार्यवाह होसबले ने बताया कि 1978 में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद की बेंगलुरु बैठक में मदन जी ने उनसे संगठन मंत्री बनने के लिए कहा। इसकी घोषणा मंच से कर दी गई।

मदन जी अपने सूक्ष्म अवलोकन के लिए भी पहचाने जाते थे और वह एक महान मानव मनोविज्ञानी थे। वह सभी का आकलन करते थे और पूर्वाग्रह से कभी भी ग्रस्त नहीं हुए। व्यक्ति के गुणों को कैसे बढ़ाया जाए? उनके दुःख कैसे दूर हों? यही उनकी संगठन के प्रति समर्पण वाली भूमिका रही। शब्दों के अर्थ और उसे जीवन में कैसे उतारना है- यह उन्होंने चरितार्थ किया और हजारों कार्यकर्ताओं को जोड़ा। मदन जी साक्षात रूप में अब कभी नहीं दिखाई देंगे, लेकिन उनका ज्ञान, विचार, कार्यपद्धति और राष्ट्र चिंतन लाखों लोगों का मार्गदर्शन हमेशा करता रहेगा।

अनिल गुप्ता
सीए

यह स्वीकार करने के लिए मन तैयार नहीं है कि मदन जी अब हमारे बीच नहीं हैं। एक संत पुरुष के रूप में उन्होंने हमारा मार्गदर्शन किया, शिक्षा और संस्कार दिए और ऐसे ही लोग अमरत्व प्राप्त करते हैं। 1997 में उन्होंने सीए और अन्य वित्तीय सलाहकारों को जोड़ा और वित्त सलाहकार समिति का गठन किया। आज वह नहीं हैं, उनके चरणों में प्रणाम। प्रभु उन्हें अपने चरणों में स्थान प्रदान करे और अगर उनका पुनर्जन्म हो तो भारत की भूमि पर हो और वह पुनः संघ कार्य करते हुए सभी का मार्गदर्शन करें।

मोक्षदायिनी गंगा में प्रवाहित की गईं मदनदास जी की अस्थियां

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के पूर्व सह-सरकार्यवाह एवं अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के पूर्व राष्ट्रीय संगठन मंत्री श्रद्धेय मदनदास देवी जी की अस्थियां गत 2 अगस्त को हरिद्वार के ब्रह्मकुंड घाट पर मोक्षदायिनी मां गंगा जी में प्रवाहित की गईं। इससे पहले हरिद्वार स्थित श्रीकृष्ण कृपाधाम आश्रम में एक श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। श्रद्धांजलि सभा में उत्तराखंड के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के उत्तराखंड प्रांत प्रचारक डॉ. शैलेंद्र, अभाविप के राष्ट्रीय सह-संगठन मंत्री प्रफुल्ल आकांत, भाजपा के प्रधान कार्यालय प्रमुख व अभाविप के पूर्व राष्ट्रीय महामंत्री महेन्द्र पांडेय, उत्तराखंड सरकार के मंत्रीगण क्रमशः धन सिंह रावत, सतपाल महाराज, प्रेमचंद अग्रवाल, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के क्षेत्र प्रचार प्रमुख पदम सिंह, दिव्य प्रेम सेवा मिशन के संस्थापक अध्यक्ष आशीष गौतम, अभाविप उत्तराखंड प्रदेश अध्यक्ष डॉ. ममता सिंह, अभाविप उत्तराखंड प्रदेश मंत्री रितांशु कंडारी, महामंडलेश्वर हरि चेतनानंद सहित उपस्थित कई गणमान्य नागरिकों तथा कार्यकर्ताओं ने उनकी आत्मा की सद्गति हेतु प्रार्थना करते हुए उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की। श्रद्धांजलि सभा के उपरांत अभाविप के राष्ट्रीय संगठन मंत्री आशीष चौहान ने स्वर्गीय मदनदास देवी जी की अस्थियां हरिद्वार के ब्रह्मकुंड घाट पर मोक्षदायिनी मां गंगा जी में प्रवाहित कीं। हरिद्वार में आयोजित श्रद्धांजलि सभा में उत्तराखंड के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने कहा कि स्वर्गीय मदनदास देवी जी से जीवन में विभिन्न अवसरों पर सीखने को मिला। वह कामना करते हैं कि श्रद्धेय मदनदास देवी जी जैसे व्यक्तित्व भारत देश में आगे भी जन्म लें। स्वर्गीय मदनदास देवी जी के जीवन का प्रत्येक क्षण राष्ट्र एवं समाज को समर्पित रहा। उनके व्यक्तित्व की ऊष्मा से कार्यकर्ताओं में जो निखार आया है, वह आज समाज के प्रत्येक क्षेत्र में देखने को मिलता है।

श्रद्धांजलि सभा में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद

अशोक भगत
सचिव, विकास भारती

यह 1970 की बात है। उस समय मैं आजमगढ़ में छात्र संघ का अध्यक्ष था। उसी समय विद्यार्थी परिषद से संपर्क हुआ और फिर मैं विद्यार्थी परिषद का अध्यक्ष बना। उनसे हुई मुलाकात के बाद कार्य का दायित्व मिला और फिर प्रचारक के रूप में मैं गोरखपुर चला गया। उस समय मदन जी से जो संपर्क बना, वह दो वर्ष पहले तक बना रहा। विद्यार्थी परिषद के प्रवास क्रम में वह हमें कई बार कार्य के सम्बन्ध में टोकते रहते थे। विकास भारती को चलाने के लिए जब संघ की आवश्यकता हुई तो कलकत्ता में हुई बैठक के बाद संघ और विकास भारती ने एक संगठन के रूप में कार्य प्रारम्भ किया। मदन जी ने हर दायित्व को सफलतापूर्वक निभाया। अब वह नहीं है, लेकिन उनके सूत्र हमें कार्य करने के लिए हमेशा प्रेरित करते रहेंगे।

आलोक कुमार,
अंतरराष्ट्रीय अध्यक्ष,
विश्व हिन्दू परिषद

जब 1977 में पंजाब में विद्यार्थी परिषद के संगठन मंत्री का दायित्व मिला, उसके बाद मदन जी का छह दिन का प्रवास पंजाब में था। इसे प्रवास नहीं कहा गया क्योंकि यह प्रशिक्षण का कार्य था। उन्होंने हमें अपने आचरण और व्यवहार से जो समझाया, वह जीवन भर काम आया। उनके प्रति सभी की अनन्य श्रद्धा थी और उनकी सहजता भी थी। वह बीमार हो गए, लेकिन उनका प्रेम और घनीभूत हो गया। कार्यकर्ताओं को वह एक या दो वाक्य में कोई बात बताते थे, जिसे ध्यान रखना होता था। अब वह नहीं हैं, लेकिन एक मित्र के रूप में हमेशा उनको याद रखा जाएगा।

राजकुमार भाटिया
पूर्व अध्यक्ष एवं पूर्व महामंत्री, अभाविप

हम सभी प्रायः महापुरुषों की चर्चा करते हैं। मदन जी भी एक महापुरुष थे। मैं उनके साथ 1970 में मंत्री पद पर था। उनके साथ पचास वर्ष का सम्बन्ध रहा। वह व्यक्तियों के पारखी थे। यशवंत राव केलकर उनके गुरु के समान थे। मदन जी के कमरे में केलकर जी का चित्र लगा रहता था क्योंकि केलकर जी ही विद्यार्थी परिषद के रचनाकार थे। वास्तव में मदन जी के अनुकरणीय आदर्श केलकर जी ही थे। मदन जी व्यक्ति की कमजोरी को समझते थे और कमजोरी-दोष को जानकर ही वह लोगों को संगठन में जोड़ते थे। उन्होंने 1991 में संघ के दायित्व को संभाला। संघ के कई महत्वपूर्ण निर्णयों में मदन जी के योगदान को भुलाया नहीं जा सकता है।

आशीष चौहान
संगठन मंत्री, अभाविप

मदन जी से कुछ समय पहले जब भेंट हुई, उस समय उनका स्वास्थ्य ठीक नहीं था। उनसे 2012 में पहली बार मिला था। उस समय मैं थिंक इंडिया प्रकल्प का संयोजक था। जब उनसे मिला तो कई जानकारियां प्राप्त हुई। मदन दास जी कार्यकर्ता को बहुत कुछ बोलते थे, लेकिन उनका आग्रह कार्य से जुड़ा होता था। पिछली पीढ़ी के कार्यकर्ता जब मिलते हैं तो मदन जी के आग्रह का पता चलता है। एक ऋषि के रूप में मदन जी की भूमिका विद्यार्थी परिषद को सबसे बड़ा संगठन बनाने में रही है। विद्यार्थी परिषद विश्व का सबसे बड़ा संगठन बना और जो चित्र अब दिखता है, उसके बीज मदन जी ने ही बोए थे। वह एकमात्र ऐसे संगठन मंत्री रहे, जो दो पीढ़ी के साथ जुड़े। मैं उनकी स्मृति में पुष्प अर्पित करता हूं।

के राष्ट्रीय सह-संगठन मंत्री प्रफुल्ल आकांत ने कहा कि कार्यकर्ता एवं कार्य पद्धति कैसी होनी चाहिए? यह स्वर्गीय मदनदास देवी जी के कृतित्व एवं व्यक्तित्व से सीखा जा सकता है। प्रत्येक कार्यकर्ता की चिंता करना, उनका सहज भाव था। आज भले ही इस पुण्य भूमि में वे शारीरिक रूप से नहीं हैं, लेकिन उनका व्यक्तित्व-उनका कृतित्व सदा-सर्वदा कार्यकर्ताओं का मार्गदर्शन करते रहेंगे। अभाविप के पूर्व राष्ट्रीय महामंत्री महेंद्र पांडेय ने श्रद्धांजलि सभा में स्वर्गीय मदनदास देवी जी के कार्यकर्ता स्नेह भाव से जुड़ी एक घटना को साझा करते हुए बताया कि उनके स्नेह की ऊष्मा कार्यकर्ताओं को निरंतर प्रेरित करती थी तथा वह कार्यकर्ताओं के सुख-दुख में सक्रिय रूप से सहभागी होते थे।

श्रद्धांजलि सभा में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के उत्तराखंड प्रांत प्रचारक डॉ. शैलेंद्र ने कहा कि अपने विभिन्न प्रवासों में मदनदास देवी जी बहुत सहजता व सरलता से मिलते हुए भविष्य के संदर्भ में सार्थक चर्चा करते थे। उनका एक ही भाव था कि राष्ट्र सर्वशक्तिमान

होकर परम वैभव तक पहुंचे। राष्ट्र पुनर्निर्माण निमित्त उनका सम्पूर्ण जीवनकाल कार्यकर्ताओं के समुचित मार्गदर्शन को समर्पित रहा।

अभाविप की ध्येय यात्रा के दैदीप्यमान यात्री मदनदास देवी जी

स्वर्गीय मदनदास जी का जन्म अभाविप के स्थापना दिवस अर्थात 9 जुलाई के दिन ही 1942 में हुआ था। वह मूलतः महाराष्ट्र के सोलापुर जिले के करमाळा गांव के निवासी थे। प्राथमिक शिक्षा के उपरांत उच्च शिक्षा हेतु उन्होंने पुणे के प्रसिद्ध बीएमसीसी कॉलेज में 1959 में प्रवेश लिया। बीकॉम के बाद आईएलएस लॉ कॉलेज से एलएलबी की शिक्षा प्राप्त की और एलएलबी में उन्हें स्वर्ण पदक प्राप्त हुआ। इसके बाद उन्होंने चार्टर्ड एकाउंटेंट की शिक्षा भी प्राप्त की थी। पुणे में पढ़ाई के दौरान अग्रज खुशालदास देवी की प्रेरणा से वह राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संपर्क में आए। 1964 में उन्होंने मुंबई से अभाविप में कार्य प्रारंभ किया।

राम बहादुर राय
अध्यक्ष,
राष्ट्रीय कला केंद्र

हम सभी आज कर्म और सहयोग के साथ एकत्र हुए हैं। मेरे जीवन में मदन जी के कर्म योग से जुडी कई घटनाएं आज भी ताजा हैं। विद्यार्थी परिषद से जुड़ना और फिर त्रिवेंदम सम्मेलन के बाद उनके साथ कार्य करने का अवसर मिला। श्रद्धांजलि सभा में मोहन भागवत जी ने कहा कि विछोह का दुःख होता है। मदन जी मौलिक विचार वाले और विचारनिष्ठ थे। उन्होंने अपने विचारों से विद्यार्थी परिषद की दिशा और आयाम को बदल दिया और विद्यार्थी परिषद को छात्र जागरण का एक उपकरण बनाया। वह संगठन में जहां पर थे, वहां वह ऐसे अर्जुन के रूप में थे, जिसके सारथी श्रीकृष्ण थे। मदन जी ने तत्वज्ञान से सभी को जोड़ा, उत्पातियों का हृदय परिवर्तन किया। जो ग्रहणशील थे, जो सज्जन थे-उनमें परिवर्तन की प्रक्रिया विचार से ही निकली। यह तप ही है और आगामी पीढ़ी उन्हें उनके तप से ही याद करेगी।

स्वर्गीय मदनदास जी, अभाविप में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की योजना से दिए गए प्रथम प्रचारक थे। अभाविप के कर्णावती राष्ट्रीय अधिवेशन (1968) में उनकी पश्चिमांचल क्षेत्रीय संगठन मंत्री के रूप में दायित्व की घोषणा हुई। 1970 में सम्पन्न हुए तिरुवनंतपुरम राष्ट्रीय अधिवेशन में उन्होंने अभाविप के राष्ट्रीय संगठन मंत्री का गुरूतर दायित्व संभाला। 1970 से लेकर 1992 के मध्य अभाविप के राष्ट्रीय संगठन मंत्री के रूप में उनकी दूरदर्शिता तथा सतत प्रयासों से अभाविप एक प्रमुख छात्र आंदोलन के रूप में स्थापित हुआ। 1992 में उन्हें राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का दायित्व मिला और फिर उन्होंने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ में अखिल भारतीय सह-प्रचारक प्रमुख, सह-सरकार्यवाह जैसे गुरूतर दायित्वों का निर्वहन किया।

स्मृतियां...

विद्यार्थी परिषद
अधिवेशन

Madan Das ji: Imprints of an Organisational Genius

Saji Narayanan

After the dark days of the emergency period, the biggest challenge that the Sangh movement faced was the flood of people joining Sangh and its Parivar organisations. The nation recognised the Sangh movement as the driving force behind generating the mighty people's power that dethroned the autocratic regime of the Congress Party under Smt Indira Gandhi. Those raw students and teaching community who were fascinated by the ABVP's fight against the emergency and its ultimate success came in huge numbers and to convert them to committed cadre was a Himalayan task. Shri Madan Das Devi who was popularly called Madan ji or Madandas ji was the All India Organising secretary of Akhil Bharatiya Vidyarthi Parishad at that time. It was Madandas ji who exemplified his genius by taking up the challenge and moulding innumerable talents in ABVP who later became leading figures in various organisations and different walks of national life.

I saw him for the first time in my hometown, Thrissur, Kerala in 1977 where he was the Chief Guest at a students' gathering of ABVP. He was in a designed shirt and black pants, unconventional of our idea about a Sangh Pracharak. He was introduced as a person who after successfully becoming a Chartered Accountant opted to become a Pracharak devoting his whole life to the national cause. That was an inspiration for the student activists for their future course of life. In the meeting, he presented ABVP's characteristics as a cadre-based mass organisation. He was not an ardent orator but spoke mildly about national spirit, ideal organisational culture, and discipline in public life. One word that he spoke on that day in explanation that resonated in my mind throughout my organisational trajectory in life was the "conquering spirit" in our endeavour towards an ever-expanding organisational reach. Thus, one of the basic works of an ABVP activist is the expansion of our organisation- both horizontal and vertical i.e., geographical, and campus-specific. Thousands of activists with a "conquering spirit" spread our Sangh organisations to every nook and corner of the nation. It is this network that keeps our great nation intact and safe today despite several internal and external challenges.

In 1980, I had the fortune to come close to him while he was taking rest in Cochin Sangh Karyalaya after some illness. I was engaged by the ABVP leadership to look after him for about one month. It was a great learning experience about the building up of a student organisation. He shared the experience he had in various parts of the country in organising students and moulding young leadership. His inspiration prompted me while studying the law to work the whole time for ABVP for three years. The relationship with me so created on those days was maintained by Madandas ji lifelong. It was his habit to maintain contact with all those who were moulded by him throughout his life. He was a model for persistent organisational tours yielding prominent results. During my active years in ABVP, I could observe the

expansion and strengthening of ABVP work in Southern states as well as in the Northeast states under his able guidance and relentless organisational tour.

I enjoyed the breeze of his magic touch in the organisation as a mentor and guide several times. For the first time, I attended a baitak at Shimla in 1981 or so, as the National Executive Committee member of ABVP. Knowing that I had less exposure to the Hindi language, Madandas ji often came to me and enquired about my understanding of the proceedings of the meeting. His heart-to-heart communication skill was unforgettable. Even after my field of activity shifted to Bharatiya Mazdoor Sangh in the labour field, the frequent contact with him continued.

It may be a tryst of destiny that even outside ABVP work I had the fortune to work closely with Madandas ji. When Swargeeya Dattopant Thengadi ji, who was the ideologue, guide, and philosopher of the Sangh school of thought, started Swadeshi Jagaran Manch, Madandas Ji was entrusted with the task of its organisational expansion. I was active in it during its formative days, since BMS was a part of the Manch. Within a short time, Madandas ji brought into the Manch leading personalities outside the Sangh circle and extended its roots to every state in the country. During the time of the Vajpayee Government when Manch had conflicting issues, Madandas ji's organisational expertise helped in sailing the Manch through it without serious overturns.

He was fast in acting and was serious in the job, which need to be emulated by all. Once when we people went to meet him in Nagpur, one among us brought to his notice the two contradictory statements of two leaders of the same organisation that appeared in the newspaper. He immediately showed his unhappiness, called both over the phone and asked not to repeat it. There were many such lessons we learnt from him which were very much helpful in successfully running large organisations.

He was so loving at heart, though he had an exterior of seriousness. In moments of joy, he smiled and laughed from the heart. Whenever activists met him, his enquiries probed their performance as well as that of many others in organisational and national activities. Even after taking up the responsibility as the Ma. Sah Sarkaryavah of Rashtriya Swayamsevak Sangh, he contacted, talked, and gave timely guidance to us with the same spirit. He always enquired about all those who were the erstwhile products of ABVP. He always insisted on strict organisational discipline.

He owned the organisations he was assigned to supervise and was happy or unhappy in the ups and downs of the organisations. When I was elected as the All India President of Bharatiya Mazdoor Sangh, he was the contact functionary for BMS from the side of Sangh. Then also I was fortunate enough to work under his guidance. At a critical moment, it was he who asked me to take up the presidency of the largest Central Trade Union Federation in India, as desired by the other office bearers. After I was assigned the said task, he always enquired about my performance and gave guidance whenever required. His frequent encouragement to karyakarthas like me in handling the organisation has helped the organisation to advance fast in the labour field. His guidance and assistance were of immense use in stewarding the organisation at a turbulent time in the labour sector. In moments of difficulty, he showed courage and was ready to take risks, which characteristic attracted me very much. Our movement always should have such stalwarts as sources of inspiration.

In organisational activity, he pointed out some key office bearers and said they have the capacity to truly assess and deploy karyakarthas to proper assignments. He often said these two are the real criteria of successful organisers. He also cautioned against key organisers who did not

display such skill and shifted them at the appropriate time to other responsibilities without any hesitation. Madandas ji himself was a living example of proper assessment and deployment of workers. Infirmities in the organisation arise due to the flaws in this skill. I had several such experiences of observing the amazing way in which he was handling talented workers.

Slowly we saw his health deteriorating. We were saddened to see that he could not move around and guide karyakarthas as before. Despite medical advice and suggestions by senior Sangh adhikaries, he always wanted to attend important Sangh baitaks and meet all the karyakarthas there. In Akhil Bharatiya Pratinidhi Sabhas held every year, he was seen attending sessions promptly on time even while his health was deteriorating. Such was his willpower generated by his dedication to the cause of Sangh. He used to come to Kerala for Ayurvedic treatment and I never missed meeting him and spending time with him. I have felt how much he was happy to see workers like me and share his old memoirs. If I am a little bit late to meet him due to organisational preoccupations, I could read from his face his feelings. Such was the emotional attachment he had with karyakarthas.

Indeed, he was one among many organisational geniuses the great Sangh movement has produced. When a senior Sangh functionary expired, during the obituary meeting, Shri Dattopant Thengadi ji gave an example of how Sangh looked at the separation of great leaders. While Ganga Matha is flowing relentlessly, suppose we take a bucket full of water. We may think that a vacuum will be created in the river. But immediately, the surrounding water fills the gap, and the river Ganga flows continuously.

Even if you and I are gone, the great divine Sangh movement will go on uninterruptedly, he said. In the same way, Madandas ji's sad demise has left a vacuum among all those who have seen him as a living light of guidance in the organisation. But the void will be soon filled up by thousands of dedicated karyakarthas who are inspired by the ideals of his life and the Sangh ganga will go on flowing without any interruption. ■

(Former President, Bharatiya Mazdoor Sangh)

NEWS

ABVP protested in Siliguri against disrobing and assault of two women in Malda

The Akhil Bharatiya Vidyarthi Parishad (ABVP) raised its voice against the alleged incident of disrobing and assault of two women in Malda. In this regard, on Sunday, the ABVP workers and supporters protested by blocking the road at Hashmi Chowk (Venus More) in Siliguri.

During the protest, the organization demanded strict punishment against the accused involved in the incident and further to ensure the safety of the women of the state. Today, the said protest was undertaken with posters and banners. Reportedly, a clash broke out between the protestors and the police when the former tried to burn an effigy. Later, the members of the organization resorted to demonstrations and condemned the incident. ■

(Rashtiriya Chhatrashakti Team)

ABVP's Bhagyanagar rally witnessed thousands of students gathering unitedly called for the development of Telangana.

'1.91 lakh vacancies in Telangana must be filled soon: ABVP.'

'KadanaBheri,' a protest march and public meeting organised by ABVP at Parade Ground, Secunderabad, Telangana with the aim of highlighting the pressing issues plaguing the education sector in the State attracted around 86,000 students from more than twelve hundred colleges of 33 districts of Telangana, on 1st August 2023.Through this historic gathering of the Akhil BharatiyaVidyarthi Parishad, the youth of Telangana demanded Fee Regulation Act, implementation of the National Education Policy-2020 in the state, fee reimbursement and pending payment of 5,300 crores of scholarship dues, better social welfare hostels and gurukuls etc.

ABVP's 'KadanaBheri' rally has also demanded restructuring and strengthening of TSPSC in Telangana, filling up of 1.91 lakh vacancies in various departments under the state government soon, securing land for all universities in Telangana,etc.

At present the corrupt government of Telangana has completely neglected the needs of the common man and the natives of the state have lost hope from the present government.

ABVP National General Secretary Yagyavalkya Shukla said, "Thousands of students in Telangana today demanded solutions to educational problems in the state. The state government of Telangana has turned a blind eye to the problems of the youth. Youth in ABVP rally today warned the state government that the issues of the youth cannot be ignored in the state. The state's government schools and colleges are in pathetic condition and the education system is plagued by the exploits of the education mafia. K. Chandrasekhar Rao failed the state's youth and their expectations."

ABVP National Secretary Ankita Pawar said, "Instead of solving the problems of the youth of Telangana, KCR is misusing the taxpayers money of the state on false advertisements. Unemployment is at its peak in the state and all fronts of development are collapsing.No efforts are visible from the present government to improve the pathetic condition of the state. Students in the state are upset due to unavailability of scholarship, no efforts are taken to improve this situation."

ABVP National Organising Secretary Ashish Chauhan said "Progress in Telangana means the progress of K. Chandrasekhar Rao's family, it has nothing to do with the progress of the state. At present Telangana lags behind in many sectors including education, startups, IT etc. The policies of the state government are entirely responsible for this. The corruption of the state government has stalled development in Telangana."

ABVP National Joint OrganisingSecretary S.Balakrishna said,"Politics of development should be on priority in Telangana, leaving low-level politics, so that prosperity can come into the state. There are lakhs of vacancies in various departments of the state government, due to which the work is being affected as well as there is anger among the youth also because of non-filling of these vacancies. The state government will have to ensure that the appointments of all the departments are filled in mission mode."

ABVP Telangana state secretary Kumari Jhansi said, "The problem of employment for the youth of Telangana is unavoidable. The state government has failed to organise the examinations properly, In the past, when there was agitation under the leadership of Akhil Bharatiya Vidyarthi Parishad regarding paper leak incident and demand for employment, instead of solving the problems, the state government tried to hide its failures by police repression. Today the youth of the state are disturbed due to the failures of the state government.Due to the failures of Chandrashekhar Rao, the education system of the state has reached the abyss. Today 'KadnaBheri' has prominently raised various problems of youth and students." ■

(Rashtriya Chhatrashakti Team)

Student's Prote

st in Telangana

बिंदी लगाने की सजा मौत
अभाविप ने किया विरोध प्रदर्शन

| अजीत कुमार सिंह |

हर दिन की तरह उस दिन भी ऊषा सुबह-सुबह स्कूल गई। लेकिन उसे यह नहीं पता था कि आज का दिन स्कूल का नहीं, बल्कि इस दुनिया में उसका आखिरी दिन होगा? उसे नहीं पता था कि अपने ही देश में उसे अपनी परंपराओं और मान्यताओं को पालन करने पर प्रताड़ित किया जाएगा और सरेआम सभी छात्रों के सामने अपमानित किया जाएगा? वह नहीं जानती थी कि एक बिंदी लगाने की सजा उसे मौत के रूप में मिलेगी!

यह घटना मात्र बिंदी लगाने की नहीं है, बल्कि यह घटना भारतीय परंपराओं को पालन करने वाली छात्रा को विद्यालय में सभी के सामने बुरी तरह अपमानित करने की हैं। नतीजा कोई नहीं जानता था कि क्या होने वाला है? ऊषा सुबह स्कूल गई तो थोड़ी देर बाद वापस भी आ गई। घर के एक कमरे में जाकर आत्महत्या करने के विषय में एक पत्र लिखा और फिर फांसी लगाकर अपनी जान दे दी। यह दर्दनाक कहानी अपनी सनातन मान्यताओं के प्रति दृढ़ रहने वाली अनुसूचित जाति समाज से आने वाले एक परिवार में जन्म लेना वाली एक लड़की की है।

झारखंड के धनबाद जिले में तेतुलमारी थाना क्षेत्र में एक गांव है हनुमानगढ़ी और यहीं पर सेंट ज़ेवियर्स स्कूल भी है। जानकारी के अनुसार, मृत छात्रा ऊषा तेतुलमारी थाना इलाके के सेंट जेवियर्स स्कूल में 10वीं में पढ़ती थी। गत 10 जुलाई को वह बिंदी लगाकर स्कूल गई थी। लेकिन बिंदी देखकर उसकी शिक्षिका सिंधु बुरी तरह नाराज हो गई और प्रार्थना के दौरान शिक्षिका ने छात्रा से बिंदी लगाने का कारण पूछा। शिक्षिका के सवाल पर छात्रा ने जवाब भी दिया। लेकिन शिक्षिका ने सबके सामने अपमानित करते हुए छात्रा को थप्पड़ मार दिया। शिक्षिका के इस व्यवहार से छात्रा इस कदर आहत हुई कि घर पहुंचकर उसने फांसी लगाकर अपनी जान दे दी। बाद में उसकी स्कूल यूनिफॉर्म से एक पत्र भी मिला, जिसमें आत्महत्या करने के पीछे के कारणों का खुलासा किया गया।

ऊषा अपने भाई-बहन में सबसे बड़ी थी। माता-पिता के सपने को पूरा करने की जिम्मेदारी उसी के कंधों पर थी। उसके पिता की कैंसर के कारण अगस्त 2022 में मृत्यु हो गई थी। ऊषा के बाद एक भाई और बहन है। ऊषा बड़ी होकर ऑफिसर बनकर देश की सेवा करना चाहती थी। उसके भविष्य को पंख देने के लिए उसकी मां दिन-रात मेहनत करती थी। उसके सपने को पूरा करने के लिए रिश्तेदार भी सहयोग करते थे। आस्थावान ऊषा की मां को कहां पता था जिस बेटी के लिए वह जी-तोड़ मेहनत-मजदूरी कर रही है, बेहतर शिक्षा के लिए जिस संत जेवियर्स स्कूल में पढ़ा रही है, उस स्कूल और स्कूल के घृणावादी शिक्षक के कारण ही उसकी बेटी को

असमय इस दुनिया को छोड़ना पड़ेगा।

न जानें इस देश में कितने ऊषा, लावण्या जैसी छात्राओं को अपनी परंपरा, संस्कृति मानने के कारण असमय मौत को गले लगाना पड़ता है। ऊषा हो या लावण्या दोनो योद्धा थीं, दोनो ने घुटने टेकने के बजाय स्वाभिमान के साथ जीना उचित समझा, जीते जी ऊषा ने खुद को समर्पित नहीं किया। जीवन के अंतिम क्षणों में उसने आत्महत्या से पहले लिखे गए पत्र के माध्यम से

वह समाज को जगा गई, लेकिन उसे जिंदा रहना चाहिए था। उसका जिंदा रहना जरूरी था क्योंकि तभी वह इस कथित संभ्रात समाज और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा देने का दावा करने वाली मिशनरी स्कूलों में होने वाले अन्याय को और अधिक बेहतर तरीके उजागर कर सकती थी। ऊषा ने तो अपने दर्द को साझा कर दिया लेकिन अनगिनत ऊषा, लावण्या की अंतहीन दर्द अब भी ताजा है।

जानकारी हो कि 2022 में इसी तरह तमिलनाडु के तंजावुर की रहने वाली 17 वर्षीय छात्रा लावण्या को मतातंरण के दबाव के कारण अपने जीवन लीला को समाप्त करना पड़ा था। 2019 में एक अन्य घटना में जबरन मतांतरण का विरोध करने पर त्रिपुरा की एक छात्रा की छात्रावास के वार्डन द्वारा बुरी तरह पिटाई की गई थी, जिस कारण 15 वर्षीय छात्रा को अपने जान से हाथ धोना पड़ गया था। प्रश्न उठता है आखिर कब तक अपनी परंपरा, संस्कृति और मान्यता को मानने वाली ऊषा, लावण्या जैसों को अपने प्राणों की आहुति देनी होगी ?

राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग के अध्यक्ष ने पुलिस की कार्रवाई पर जताया असंतोष, स्वयं पहुंचे घटनास्थल

17 वर्षीय छात्रा ऊषा कुमारी की आत्महत्या के मामले की जांच के लिए गत 15 जुलाई को राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग के अध्यक्ष प्रियंक कानूनगो धनबाद पहुंचे और छात्रा की माता एवं अन्य परिवारजनों से जानकारी ली। मृत छात्रा की सहेलियों व स्कूल के प्रभारी प्रबंधक से भी उन्होंने बात की। इसके बाद वह तेतुलमारी थाना पहुंचे, जहां उन्होंने इस मामले में अबतक की कार्रवाई की जानकारी ली। आयोग के अध्यक्ष ने घटना को दुर्भाग्यपूर्ण बताया और वह स्वयं पुलिस की कार्रवाई से असंतुष्ट दिखे। उन्होंने कहा कि पुलिस की कार्रवाई में कई कमियां नजर आ रही है। स्कूल के गैर मान्यता प्राप्त होने के लिए उन्होंने उपायुक्त व ब्लॉक शिक्षा पदाधिकारी को जिम्मेदार ठहराया।

ऊषा को न्याय दिलाने के लिए अभाविप ने किया विरोध प्रदर्शन

अपनी परंपरा और संस्कृति को मानने वाली 10 वीं कक्षा

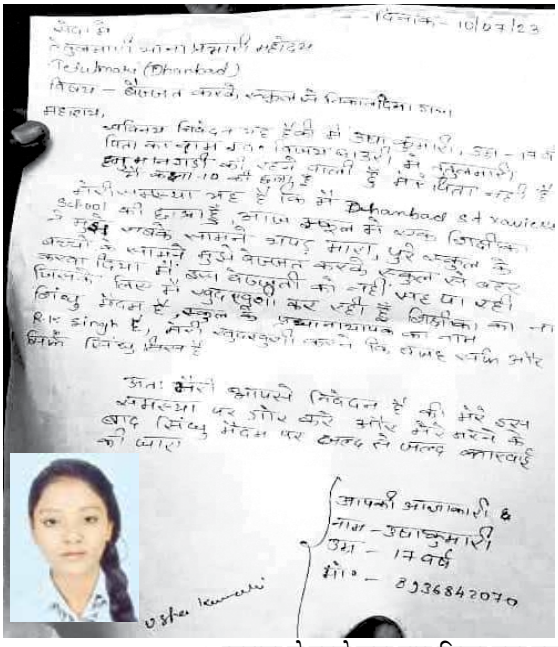

आत्महत्या से पहले ऊषा द्वारा लिखा गया पत्र

में पढ़ने वाली छात्रा ऊषा को न्याय दिलाने की मांग को लेकर अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) ने विरोध प्रदर्शन किया एवं संत जेवियर की शिक्षिका व प्राचार्य का पुतला फूंका। अभाविप ने सरकार से मांग की है कि सरकार अविलंब दोषियों पर कठोर कार्रवाई करे अन्यथा परिषद पूरे प्रदेश में उग्र आंदोलन करेगी। इससे पहले गत 11 जुलाई को अभाविप प्रतिनिधिमंडल ने छात्रा के परिजनों से मुलाकात करके उन्हें न्याय दिलाने का हर संभव भरोसा दिया।

घटना पर रोष व्यक्त करते हुए अभाविप राष्ट्रीय महामंत्री याज्ञवल्क्य शुक्ल ने कहा कि धनबाद के संत जेवियर्स स्कूल में पढ़ने वाली 10 वीं छात्रा के आत्महत्या का समाचार आत्मा को झकझोर देने वाला है। झारखंड में सनातन संस्कृति के ऊपर लगातार हो रहे षड़यंत्र अत्यंत दुर्भाग्यपूर्ण और दुखद है। उधर अभाविप झारखंड प्रांत मंत्री सोमनाथ भगत ने हेमंत सरकार से मांग की है कि इस मामले को गंभीरता से लें एवं दोषी शिक्षक पर ऐसी कठोर कार्रवाई करें ताकि आने वाले समय में किसी और ऊषा को बिंदी लगाने या अपनी मान्यताओं को पालन करने के कारण आत्महत्या के लिए विवश न होना पड़े।

भारतीय भाषाओं में शिक्षा ग्रहण कर सकेंगे विद्यार्थी

केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सीबीएसई) के विद्यार्थी अब 22 भारतीय भाषाओं में शिक्षा ग्रहण कर सकेंगे। नई शिक्षा नीति-2020 के अंतर्गत केंद्रीय शिक्षा मंत्रालय द्वारा लिए गए निर्णय के अनुसार पांचवीं कक्षा तक के विद्यार्थियों को उनकी मातृभाषा में शिक्षा देने के नए पाठ्यक्रम के अनुसार राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद (एनसीईआरटी) को हिन्दी और अंग्रेजी के साथ ही 22 अन्य भारतीय भाषाओं में पुस्तकों को प्रकाशित करने निर्देश जारी कर दिए गए हैं।

शिक्षा मंत्रालय के अनुसार एनसीईआरटी को सम्पूर्ण पाठ्यक्रम 22 भाषाओं में छापने का निर्देश दिया गया है। यह सभी भाषाएं भारत के संविधान अनुच्छेद-8 में हैं। इस सम्बन्ध में सीबीएसई ने अपने सभी 28 हजार स्कूलों के लिए दिशा-निर्देश जारी कर दिए हैं। विद्यार्थी इन 22 भाषाओं में बोर्ड की परीक्षा भी दे सकेंगे। केंद्र सरकार ने यह कदम समानता को बढ़ावा देने के उद्देश्य से उठाया है। मंत्रालय के अनुसार राज्य भी अपने बोर्ड में इन 22 भाषाओं में पढ़ा सकते हैं और एनसीईआरटी जल्द ही यह पुस्तकें डिजिटल रूप में उपलब्ध करा देगी। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के अंतर्गत यह एक दूरगामी निर्णय सिद्ध होगा क्योंकि राष्ट्रीय शिक्षा नीति भारत के भविष्य का डीएनए है।

उधर दिल्ली विश्वविद्यालय (डीयू) में भी विद्यार्थी नई शिक्षा नीति के अंतर्गत 22 भारतीय भाषाओं का अध्ययन क्षमता संवर्धन के तहत कर सकेंगे। डीयू में विद्यार्थियों को पढ़ाने के लिए पांच क्लस्टर बनाए गए हैं और इनकी कक्षाएं किसी एक कालेज में लगाई जाएंगी। विद्यार्थी अपने आनर्स या बीटेक और दूसरे प्रोग्राम के साथ माइनर सब्जेक्ट के तहत भी इनका अध्ययन कर पाएंगे। इस क्लस्टर में अंग्रेजी भाषा शामिल नहीं होगी।

डीयू कुलपति प्रो. योगेश सिंह के अनुसार भौतिक शास्त्र के विद्यार्थी अगर संस्कृत पढ़ेंगे तो वह भारतीय भाषाओं में छिपे विज्ञान के कई रहस्यों से पर्दा उठाने में सक्षम होंगे। उन्होंने बताया कि डिपार्टमेंट ऑफ मॉडर्न इंडियन लैंग्वेज में नए शिक्षक नियुक्त किए गए हैं। आवश्यकता पड़ने पर दूसरे विश्वविद्यालयों से सहायता लेकर ऑनलाइन माध्यम से पढ़ाई कराई जाएगी। नई शिक्षा नीति के प्रारूप और नियमितीकरण पर बहुत काम हो चुका है और अब इसका दूसरा चरण प्रारम्भ हो रहा है।

उन्होंने बताया कि डीयू ने 25 विदेशी शैक्षणिक संस्थानों के साथ समझौता पत्र पर हस्ताक्षर किए है और इसके माध्यम से शोध को बढ़ावा दिया जाएगा। साथ ही संयुक्त डिग्री कार्यक्रमों को भी प्रारम्भ करने की तैयारी की जा रही है। इसके माध्यम से अन्य विश्वविद्यालयों के विद्यार्थी डीयू में और डीयू के विद्यार्थी अन्य विश्वविद्यालयों में जाकर शिक्षा ग्रहण कर सकेंगे।

इसी प्रकार समग्र शिक्षा के तहत कौशल शिक्षा के 109 पाठ्यक्रम शामिल किए गए हैं। कौशल शिक्षा के विषयों का उद्देश्य विद्यार्थियों को स्टार्टअप शुरू करने के लिए प्रेरित करना है। उन्होंने बताया कि दिल्ली विश्वविद्यालय आगामी दो वर्षों में स्नातकोत्तर में भी नई शिक्षा नीति को लागू कर देगा, अभी यह स्नातक स्तर पर ही लागू है। स्नातकोत्तर के पाठ्यक्रम को नई शिक्षा नीति के अनुसार बदला जा रहा है। नवीन सत्रों में विद्यार्थियों को इसका लाभ मिलेगा।

(राष्ट्रीय छात्र शक्ति टीम)

प्रकृति का प्रत्युत्तर हैं मानव प्रेरित प्राकृतिक आपदाएं

| डॉ. मयंक पाण्डेय |

इस वर्ष जुलाई माह में हुई वर्षा से उत्तर भारत के अनेक हिस्सों को बाढ़ की स्थिति का सामना करना पड़ा। देश की राजधानी दिल्ली और गुरुग्राम जैसे राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के प्रमुख नगर-महानगर जलमग्न हो गए और जनजीवन अस्त-व्यस्त हो गया। मैदानी इलाकों में नदी डूब क्षेत्र में रह रही एक बड़ी जनसंख्या को थोड़े समय के लिए विस्थापन की मार झेलनी पड़ी तथा सावधानी हेतु कुछ दिन के लिए शिक्षण संस्थान तक बंद करने पड़े। दिल्ली में ऐसे हालात और यमुना नदी का बढ़ा जलस्तर चार दशक बाद देखने को मिला। हिमाचल प्रदेश और उत्तराखण्ड जैसे पर्वतीय राज्यों में नदियां उफान पर थीं और अपने रास्ते में आने वाले सभी अवरोधों को खिलौनों की भांति अपने साथ बहा ले गयीं। अनेक लोगों की जान गई और जनसामान्य की संपत्ति और जीविकोपार्जन के अधिकांश साधन नष्ट हो गए।

ऐसा देश में पहली बार नहीं हुआ। मानसून के समय देश के अनेक भू-भागों में प्रतिवर्ष ऐसी घटनाओं की सूचना और छायाचित्र देखने को मिलते हैं। यह कहना अतिश्योक्ति नहीं होगी कि विगत कुछ वर्षों से ऐसी घटनाओं की पुनरावृत्ति बढ़ी है। प्रश्न यह उठता है कि ऐसी आपदाएं पूर्णतः प्राकृतिक हैं क्या? या इनमें मानव का कोई हस्तक्षेप है अथवा यह पूरी तरह मानव जनित और निर्मित हैं। क्या ऐसी आपदाओं को मानव प्रेरित प्राकृतिक आपदा कहना ठीक नहीं होगा?

वैज्ञानिक तथ्यों, आकड़ों और पारंपरिक ज्ञान के प्रकाश में यह सर्वविदित है कि पिछले लगभग चार सौ वर्षों से हो रहे निरंतर मानवजनित क्रिया-कलापों ने प्रकृति को गंभीर नुकसान पहुंचाया है, जो आज प्रदूषण, वैश्विक तापमान में वृद्धि, जलवायु परिवर्तन, जैव-विविधता में ह्रास आदि के रूप में दिख रहा है। जलवायु परिवर्तन के कारण मौसम अपने चरम स्तर तक पहुंच रहे हैं, जिससे वर्ष में भीषण गर्मी, भयंकर सर्दी और कम समय में अत्यधिक वर्षा जैसी घटनाएं देखने को मिल रही हैं। बारिश के साथ-साथ भू-स्खलन से भी जान-माल की बड़ी हानि होती है। ऐसी प्राकृतिक आपदाओं के बाद फैलने वाली बीमारियां (जैसे मलेरिया, चिकुनगुनिया, डेंगू आदि) समस्या को कई गुणा बढ़ा देती हैं।

नगरों की दीन दशा

नगरों को ग्रामीण अंचलों से अधिक सुदृढ़, सुव्यवस्थित और सुनियोजित माना जाता रहा है। यह आम धारणा है कि शहरों की संरचना और नागरिक अनुकूल प्रणाली किसी प्राकृतिक आपदा का सामना करने और निपटने में अधिक कारगर है। परन्तु, वास्तविकता कुछ और ही है। जनसंख्या में अकल्पित वृद्धि एवं नगरों की ओर पलायन, अनियोजित रूप से नगरों का विकास एवं विस्तार, नगर संरचना तथा प्रणाली का ख़राब रख-रखाव, नागरिकों में दायित्व-बोध का अभाव, सरकारी एवं गैर-सरकारी तंत्र का ढुलमुल रवैया आदि वह प्रमुख

कारण हैं, जिनसे नगरों में आपदाओं का दुष्प्रभाव ग्रामीण एवं सुदूर क्षेत्रों की तुलना में कई गुणा अधिक दिखता है। शहरी इलाकों में प्रायः होने वाले जलभराव को एक नया वैज्ञानिक नाम मिला है -शहरी बाढ़ (Urban Flood)। दिल्ली, गुरुग्राम, मुंबई, चेन्नई, जयपुर, श्रीनगर आदि महानगरों में विगत कुछ वर्षों में हुई अतिवृष्टि और बाढ़ की घटनाएं इसका जीवंत उदाहरण हैं। शहरों में उचित जल-निकासी की व्यवस्था न होना, प्लास्टिक आदि ठोस अपशिष्ट से नालियां जाम होना, आधारभूत ढांचे का सही रख-रखाव न होना आदि शहरी बाढ़ की स्थिति पैदा करने में मुख्य कारक हैं। ऐसे में यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि वर्तमान नगर संरचना एवं प्रणाली, लगातार बढ़ती मानव-मांग और गलत मानवीय जीवन शैली के समक्ष बौनी साबित हो रही है।

यह सर्व-विदित तथ्य है कि तालाब/पोखर इत्यादि मानव की नदियों पर निर्भरता को कई गुणा कम करते हैं अर्थात तालाब मानव की दैनिक जल एवं जीविकोपार्जन आवश्यकता को पूरी करते हैं। साथ ही, तालाब/पोखर भू-जल की स्थिति को भी सुधारते हैं। भारत के लगभग हर शहर में एक या अधिक प्राकृतिक अथवा मानव निर्मित जलस्रोत (जैसे-पोखर, तालाब आदि) हुआ करते थे, जिनका अपना पारिस्थितिक तंत्र हुआ करता था और जो न केवल जल उपलब्ध करवाते थे, बल्कि बाढ़ अथवा बढ़े जलस्तर के समय एक अवरोध की भूमिका निभाते थे। परन्तु, समय के साथ और तीव्र नगरीकरण के दबाव में यह नष्ट हो गए या समाप्त कर दिए गए और इसका प्रतिकूल प्रभाव हमें देखने को मिल रहा है। अतः यह आवश्यक है कि सरकार और समाज नगरों और ग्रामीण अंचलों में इन तालाबों, पोखरों, सरोवरों, बावडियों इत्यादि के निर्माण/जीर्णोद्धार की चिंता करे एवं जन-सहभागिता से इस दिशा में त्वरित कार्य करें।

पर्वतीय क्षेत्रों की त्रासदी

पश्चिम से पूर्व तक फैला और तीन श्रृंखलाओं (हिमाद्री, हिमाचल और शिवालिक) में विभाजित हिमालय, हमारे देश के भू-भाग का सिरमौर है। हिमालय क्षेत्र की जैव-विवधता और प्राकृतिक सुन्दरता अतुलनीय हैं। हिमालय, न केवल नदियों बल्कि संस्कृतियों का भी उद्गम स्थल है। विश्व की सबसे युवा पर्वत श्रृंखला होने के कारण यहां का पारिस्थितिक तंत्र नाजुक है, जो मानवीय हस्तक्षेप से और भी क्षण-भंगुर हो गया है। हिमालय क्षेत्र में जंगलों की कटान, अतिक्रमण, अनियोजित बसाहट, अत्यधिक पर्यटन एवं पर्यटकों का गैर-जिम्मेदाराना व्यवहार, अनियोजित निर्माण, ठोस अपशिष्ट प्रबंधन की कमी, प्रदूषण आदि ने न केवल वहां के पर्यावरण, बल्कि वहां की सामाजिक -आर्थिक-सांस्कृतिक संरचना में भी आमूल-चूल बदलाव किए हैं। जुलाई-2023 में हिमाचल प्रदेश के कुल्लू, मनाली, मणिकरण, चंबा आदि क्षेत्रों में बारिश से हुई तबाही के पीछे अनियोजित और अनियंत्रित पर्यटन तथा पर्यटन से अधिकाधिक लाभ लेने की मंशा से नदियों के किनारे खड़े किए गए अतिक्रमण (होटल, भवन आदि) भी जिम्मेदार हैं।

आपदाओं की तीव्रता बढ़ाने वाले कारक

- जलवायु परिवर्तन के कारण प्राकृतिक आपदाओं एवं तीव्र मौसमी घटनाओं की पुनरावृत्ति
- प्रकृति केन्द्रित विकास के स्थान पर मानव-केन्द्रित विकास
- नगर संरचना एवं प्रणाली में समयानुकूल एवं प्रकृति के अनुसार निर्माण एवं बदलाव न होना
- शहरों में वर्षा जल संचयन का सही तंत्र एवं प्रणाली का न होना
- शहरी आधारभूत ढांचे का सही रखरखाव न होना
- पर्वतीय क्षेत्रों में संसाधनों का अत्यधिक दोहन और उससे होने वाली दुर्घटनाएं (जैसे वनोन्मूलन, अनियंत्रित पर्यटन, भू-स्खलन आदि)

मानव प्रेरित प्राकृतिक आपदाओं से सफलतापूर्वक निपटने के लिए कुछ सामान्य उपाय जो सुलभता से अपनाए जा सकते हैं, वह इस प्रकार हैं -

- जलवायु परिवर्तन एवं चरम मौसम सम्बन्धी घटनाओं से निपटने के लिए प्रकृति केन्द्रित विकास एवं योजना करना।
- प्रत्येक नगर एवं घनी आबादी वाले क्षेत्रों में पार्क/बगीचे आदि के रूप में कच्ची भूमि छोड़ना।
- स्थानीय प्रजाति वाले वृक्षों एवं वनस्पतियों का सघन रोपण।

- जहां कहीं संभव हो, नए पोखर/ तालाबों/ सरोवरों/ बावड़ियों का निर्माण एवं पुराने जल स्रोतों का जीर्णोद्धार करना। ऐसी संरचनाएं न केवल जलस्रोत का काम करेंगी बल्कि मलजल एवं अपशिष्ट जल शोधन एवं भूजल रिचार्ज का भी काम करेंगी। साथ ही, बाढ़ जैसी स्थिति में नदियों और घनी आबादी के बीच कवच का भी काम करेंगी।
- ठोस अपशिष्ट किसी भी आधारभूत संरचना के लिए अभिशाप हैं। अतः, वैज्ञानिक तरीके से दक्षतापूर्वक ठोस अपशिष्ट प्रबंधन करना। साथ ही, सिंगल यूज़ प्लास्टिक जैसे हानिकारक पदार्थों का नियम, दण्ड एवं जन-सहभागिता के द्वारा पूर्ण बहिष्कार।
- पारिस्थितिक रूप से संवेदनशील क्षेत्र, जैसे पहाड़ों, पर पर्यटन गतिवधियां एवं पर्यटकों की अधिकतम सीमा तय की जाएं। साथ ही, पर्यटन से सम्बंधित कुछ मापदंड एवं नियम लागू होने ही चाहिए।

अगर हमें भविष्य में आपदाओं की पुनरावृत्ति एवं तीव्रता कम करनी है तो यह आवश्यक है कि सरकार और समाज प्रकृति आधारित विकास एवं संरचनाओं को बढ़ावा दें। निश्चित रूप से आने वाले समय में मांग और आपूर्ति का अभूतपूर्व दबाव नीति-निर्धारकों एवं जन-सामान्य पर आएगा, परन्तु पहले की गलतियों से सीख लेते हुए अगर हम प्रकृति को ध्यान में रखकर योजना बनायेंगे तो परिणाम निश्चित ही सुखद होंगे। ■

(लेखक दिल्ली विश्वविद्यालय के पीजीडीएवी महाविद्यालय (सांध्य) में पर्यावरण अध्ययन विभाग में असिस्टेंट प्रोफेसर हैं)

KARNATAKA

ABVP holds massive Protest against Udupi College Washroom Video Controversy

Udupi: Activists from the Akhil Bharatiya Vidyarthi Parishad (ABVP) staged a protest in Udupi on Thursday, July 27 demanding justice for the Hindu student who was filmed by three Muslim students inside the college washroom.

The activists urged that justice should be given to the victim. The protesters urged the SP to come to the spot and give clarifications. There was a tussle between the protesting students and the police force in the presence of Udupi MLA Yashpal Suvarna.

The protesters submitted a memorandum to the Superintendent of Police Hakay Akshay Machhindra, urging strict action against the three students responsible for the act. They warned that if appropriate measures will not be taken within a limited period, they will intensify their protests across the district.

However, the situation turned tense as a scuffle broke out between the protesting students

and the police force. The Superintendent of Police visited the protest site later to address the protestors' demands and clarification was given. SP said, "We will act only on the basis of the facts and merit of the case. We have sent the phone to the forensic lab to retrieve all the data".

Responding to, if there was some kind of political pressure for the delay in filing a case, the SP said, "We have no such pressure. We will get the detailed analysis of the mobile phones and investigate the case thoroughly." ■

हिंसा पीड़ितों के बीच उम्मीद की किरण बन उभरे अभाविप कार्यकर्ता

मणिपुर में गत मई माह में मैतेई और कुकी समुदाय की बीच हुई हिंसक झड़प के कारण हजारों लोगों को विस्थापित होना पड़ा। एक आंकड़े के अनुसार लगभग 60 हजार से अधिक लोग हिंसा के कारण राहत शिविर में रहने के लिए बाध्य हैं। साथ ही प्रवासी राज्यों के छात्रों को भी पलायन करना पड़ा। हिंसा के बीच अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) कार्यकर्ता लोगों के बीच उम्मीद की किरण बनकर उभरे हैं। एक जिम्मेदार छात्र संगठन होने के कारण अभाविप ने जहां एक ओर प्रवासी छात्रों को सुरक्षित उनके घर भेजने की व्यवस्था की, वहीं राहत शिविरों में रहने वाले लोगों को बुनियादी सुविधाएं उपलब्ध करा रही है।

अभाविप प्रांत संगठन मंत्री भागवत सिंह ने बताया कि गत 8 मई से लोग राहत शिविर में आ गए। राज्य सरकार उन्हें राशन सामग्री दे रही थी। इस बीच विद्यार्थी परिषद द्वारा 30 से 40 स्थानों पर महिलाओं के लिए सैनेटरी पैड एवं नवजात बच्चों के लिए दूध की व्यवस्था की गई। 54 राहत शिविरों में स्टूडेंट फॉर सेवा के माध्यम से लगभग तीन हजार बच्चों के लिए पाठ्य सामग्री, खेल सामग्री इत्यादि का वितरण किया गया है। उन्होंने बताया कि राहत शिविरों में रहने वाले गलत रास्ते पर न जाए इस हेतु सोसायटी वालों से बात कर जिन बच्चों को नौकरी की आवश्यकता है, उसके लिए स्वावलंबी भारत योजना के तहत प्रशिक्षित कर नौकरी दिलाने में सहायता प्रदान कर रहे हैं। साथ ही उनके लिए काउंसलिंग की भी व्यवस्था की गई है।

शिविर मे रहने वाले बच्चों के लिए परिषद की पाठशाला का आयोजन

मणिपुर में फैली हिंसा के बाद हजारों परिवारों को विस्थापित होना पड़ा, जिसके कारण उन्हें राहत शिविर में रहना पड़ रहा है। वर्तमान परिस्थिति का सबसे ज्यादा शिकार बच्चे और महिलाएं हुई हैं। राहत शिविर में रहने वाले बच्चों की पढ़ाई न छूटे, इस हेतु विद्यार्थी परिषद द्वारा आठ स्थानों पर परिषद की पाठशाला का आयोजन किया जा रहा है। परिषद की पाठशाला में अभाविप कार्यकर्ता बच्चों को पढ़ा रहे हैं एवं बच्चों को पाठ्य सामग्री का वितरण भी कर रहे हैं। अभाविप के इस अभिनव प्रयोग के कारण जहां बच्चे पढ़ाई से विमुख नहीं हो रहे हैं, वहीं बच्चों के पाठ्यक्रम भी पूरे हो रहे है।

खेल सामग्री का वितरण

राहत शिविरों में रह रहे युवाओं एवं खेल प्रेमियों के बीच अभाविप कार्यकर्ताओं द्वारा फुटबॉल, शतरंज, लूडो और कैरम जैसी खेल सामग्री का वितरण भी किया गया है। अभाविप द्वारा प्राप्त खेल सामग्री को लेकर खेल प्रेमियों में काफी उत्साह है। राहत शिविर में रहने के बावजूद उन्होंने अपने जीवनचर्या में खेल को शामिल कर लिया है। अलग-अलग समूहों में विभिन्न खेलों के आयोजन में लोग भाग लेते हैं, जिससे वह शारीरिक और मानसिक दोनों रूप से सशक्त हो रहे हैं। अभाविप के प्रयासों की राज्य में सराहना की जा रही है।

स्टूडेंट सेवा यात्रा

विद्यार्थी परिषद अपने स्थापना दिवस अर्थात 9 जुलाई से अपने आयाम सेवार्थ विद्यार्थी के माध्यम से राहत शिविरों में रह रहे विद्यार्थियों के लिए स्टूडेंट सेवा यात्रा की शुरुआत की, जिसके तहत राहत शिविरों में रहने वाले बच्चों के लिए पाठ्य सामग्री जैसे-कलम, पेंसिल,

पुस्तक इत्यादि का वितरण करके अध्ययन से जुड़ी सभी समस्याओं का समाधान किया गया। अभाविप द्वारा दिए गए आंकड़ों के मुताबिक अब तक तीन हजार से अधिक बच्चों के बीच पाठ्यसामग्री का वितरण किया जा चुका है, वहीं चार हजार से अधिक बच्चों को खेल सामग्री उपलब्ध कराई गई है। साथ ही स्टूडेंट फॉर सेवा के माध्यम से भी अन्य सुविधाएं उपलब्ध कराई जा रही हैं। ■

(राष्ट्रीय छात्र शक्ति टीम)

छत्तीसगढ़

फ़ीस वृद्धि के विरोध में अभाविप ने किया केन्द्रीय विश्वविद्यालय बिलासपुर में चक्का जाम

छत्तीसगढ़ के बिलासपुर स्थित गुरु घासीदास केंद्रीय विश्वविद्यालय में फीस वृद्धि के मुद्दे को लेकर गत 5 अगस्त को अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) कार्यकर्ताओं ने विरोध प्रदर्शन किया। अपनी मांगों को लेकर अभाविप ने मुख्य द्वार पर चक्का जाम कर दिया। बाद में विश्वविद्यालय प्रबंधन ने 7 अगस्त को इस मुददे पर बैठक करने का आश्वासन दिया, जिसके बाद आंदोलन समाप्त हुआ। अभाविप कार्यकर्ताओं का कहना है कि विश्वविद्यालय प्रशासन को कई बार अवगत कराने के बाद भी फीस वृद्धि के मसले को गंभीरता से नहीं लिया गया। कोई भी सकारात्मक पहल न होते देख छात्रों को प्रदर्शन करने पर मजबूर होना पड़ा। विश्वविद्यालय के चीफ प्राक्टर डा. सुजीत मिश्रा ने धरना प्रदर्शन करने पर छात्रों को डराने और धमकाने की कोशिश भी की थी, इसके बावजूद परिषद के कार्यकर्ता सुबह से लेकर शाम तक विरोध प्रदर्शन करते रहे। प्रदर्शन में बड़ी संख्या में छात्र सम्मिलित हुए और छात्र हित के लिए आवाज उठाई। अंत में विश्वविद्यालय के प्रशासनिक अधिकारियों ने छात्रों को आश्वासन दिया कि इस विषय पर 7 अगस्त को एक बैठक आयोजित की जाएगी और छात्रों के हित में ही कोई निर्णय होगा। इस आश्वासन के बाद अभाविप ने विरोध प्रदर्शन को समाप्त किया। ■ *(राष्ट्रीय छात्र शक्ति टीम)*

कुत्सित राजनीति की भेंट चढ़ी महिला सुरक्षा

| डॉ. मनु शर्मा कटारिया |

कई दशकों से लगातार महिला सुरक्षा एवं सम्मान जैसा अत्यधिक संवेदनशील और महत्वपूर्ण विषय राजनीति की भेंट चढ़ता चला आ रहा है। महिला सुरक्षा के विषय को पार्टियां अपनी राजनीतिक उठा-पटक के लिए प्रयोग करती हैं, जिसका परिणाम महिलाओं को ही भुगतना पड़ता है।

देश अभी भूला नहीं है कि अजमेर में क्या हुआ था? 1991-92 में राजस्थान के अजमेर स्थित एक प्रतिष्ठित विद्यालय, जिसमें संभ्रांत परिवारों की बेटियां पढ़ रही थीं, की लगभग सौ से अधिक छात्राओं का बलात्कार करने वाले फारूक चिश्ती, अनवर, नफीस, इकबाल, सलीम, सुहैल, अल्मास, हुसैन, इशरत, मोइजुल्लाह, परवेज, नसीम, शम्शुद्दीन, जऊर सहित अन्य सभी दोषियों को राजनीतिक अभयदान प्राप्त होने के कारण तथा स्वयं की मान प्रतिष्ठा बचाने हेतु सभी छात्राओं के सम्पन्न एवं समर्थ माता-पिता भी अपमान का घूंट पीकर रह गए थे। कुछ वर्षों बाद यह सारा मामला सामने आने के बाद भी नारी उत्थान एवं स्वातंत्र्य का नारा लगाने वालों ने इस वीभत्स घटना पर कोई प्रतिक्रिया तक नहीं व्यक्त की। ऐसे में प्रश्न यह उठता है कि क्या उन छात्राओं को न्याय दिलाने का प्रयास करना आवश्यक नहीं था?

इसी तरह 1990 में कश्मीर में हुए नरसंहार का दंश सबसे अधिक महिलाओं को ही भुगतना पड़ा। गिरिजा टिक्कू को सामूहिक बलात्कार करने के बाद आरे से जीवित ही काट दिया गया। कश्मीर की धरती महिलाओं पर हुए ऐसे अनगिनत घिनौने अत्याचारों को याद कर आज भी सिसक उठती है, किन्तु उनके लिए न्याय मांगने वाली आवाजें नहीं उठतीं। अभी कुछ ही समय पहले कर्नाटक के उडुपी स्थित नेत्र ज्योति कॉलेज के प्रबंधन को हाल ही में तीन छात्राओं, अलीमातुल, शबानाज और आलिया को निलंबित करना पड़ा, क्योंकि वह स्नानघर में मोबाइल कैमरे से अपनी ही सहपाठियों की वीडियो रिकॉर्ड करके वॉट्सऐप पर अपने मित्रों को साझा कर रही थी। ऐसे कई और मामले है। क्या इन मामलों पर आक्रोश दिखा? क्या कोई सड़क पर उतर कर विरोध-प्रदर्शन के लिए आगे आया ?

राजस्थान में महिलाओं के साथ अनाचार की बढ़ती घटनाएं, पश्चिम बंगाल में चुनाव के बाद महिलाओं के साथ हुई बर्बरता, छत्तीसगढ़ में महिला के साथ सामूहिक बलात्कार की घटना, झारखंड के गांव में एक महिला को निर्वस्त्र कर पूरे गांव में घुमाना और फिर उसे जूते चप्पलों से पीटना। इन सब घटनाओं पर मौन तथा उदासीन रहने वाले लोग मणिपुर की महिलाओं के साथ हुए अन्याय व अत्याचार पर विलाप करने लगते हैं।

भारत के मुख्य न्यायाधीश डॉ. धनंजय यशवंत चंद्रचूड़ ने मणिपुर की घटना पर संज्ञान लेने की बात कही, उचित भी है परंतु यदि यही तत्परता एवं संवेदनशीलता इसके पहले हुई घटनाओं पर दिखाई गई होती तो मणिपुर की महिलाओं का ऐसा घोर अपमान ना होता। अजमेर, कश्मीर, राजस्थान, झारखंड, बंगाल, मणिपुर सभी अपने देश के हिस्से हैं और किसी भी स्थान पर होने वाली किसी भी महिला की पीड़ा हमारी अपनी पीड़ा होनी चाहिए। इसमें पक्षपात स्वीकार नहीं किया जा सकता। आज राजनीतिक लाभ लेने के लिए जो लोग मणिपुर की घटना पर अपनी छाती पीट रहे हैं, यदि यही सब लोग अजमेर, कश्मीर, राजस्थान, झारखंड, बंगाल में महिलाओं पर होने वाले अत्याचार के मामलों में उठ खड़े होते तो निश्चित रूप से आज देश में ऐसी दुखद घटनाएं नहीं घट रही होतीं।

मणिपुर घटना में समाज का एक वर्ग इसलिए नहीं चिल्ला रहा है क्योंकि गत 4 मई को दो महिलाओं के साथ जो कुछ हुआ, वह एक जघन्य अपराध था, बल्कि ऐसा इसलिए है, क्योंकि उन्हें इस घटना पर राजनीति करने और भारत को कलंकित करने का अवसर मिल गया है। मणिपुर की घटना को हमें ठीक से समझना होगा, जिन दो महिलाओं ने उन्मादी भीड़ की यातना झेली, वह कुकी जनजाति से संबंधित है और कई दिनों से चल रही हिंसा की शिकार हैं। गत 19 अप्रैल को राज्य के उच्च न्यायलय ने एक आदेश के तहत मैतेई समुदाय को भी अनुसूचित जनजाति की श्रेणी में रखने को लेकर अनुशंसा केंद्र को भेजने हेतु राज्य सरकार को निर्देश दिया था। 1949 में मणिपुर के भारतीय संघ में विलय से पहले मैतेई समुदाय, जोकि अधिकतर वैष्णव (हिंदू) है उन्हें जनजातीय समाज

का दर्जा प्राप्त था। परंतु बाद की सरकारों ने उनसे यह दर्जा छीन लिया। इस अन्याय के बाद भी मैतेई समाज ने संयम का परिचय देते हुए कानूनी मार्ग अपनाया। जब अदालत का फैसला मैतेई के पक्ष में आया, तब इसके विरुद्ध कुकी-नगा जनजाति समुदाय, जोकि मुख्यतः ईसाई है, उसका एक वर्ग हिंसक हो गया। मैतेई समाज को आदिवासी दर्जा देने का हिंसक विरोध असल में नशा-हथियार तस्करी, संरक्षित जनजातीय क्षेत्रों में जमीन का कब्जा, अलगाववाद और गैर-कानूनी मतांतरण के विरुद्ध वर्तमान सरकार के सख्ती से निपटने की मात्र प्रतिक्रिया हैं, जिसमें महिलाओं का घोर अपमान तक किया जा रहा है।

पिछले तीन माह से मणिपुर में चल रही हिंसा वास्तव में भारत के खिलाफ बहुत बड़े षड़यंत्र का हिस्सा है। यह ऐसा छद्म युद्ध है, जिसमें इन दोनों महिलाओं के सम्मान की बलि चढ़ गई। इस छद्म युद्ध में प्रत्यक्ष-परोक्ष रूप से सम्मिलित पात्र, कोई छिपे नहीं है। म्यांमार के दूरदराज इलाकों में चीन का वर्चस्व है, जहां से वह भारत में असंतुष्ट तत्वों को भड़काने, हथियार और प्रशिक्षण प्रदान कर रहा है। इसमें नशा-कारोबारियों के साथ चर्च द्वारा पोषित अलगाववादी तक शामिल है और उनकी लगाई हुई आग में मणिपुर निरंतर जल रहा है। दो महिलाओं के साथ हुई दुर्भाग्यपूर्ण घटना पर गुस्सा तो एक बहाना है, वास्तव में इसे देशविरोधी शक्तियों द्वारा भारत को कलंकित करने की रणनीति के एक भाग के रूप में देखा जाना चाहिए। महिलाओं पर हुए अत्याचारों के विषय में जहां हमारी संवेदनशीलता एवं जागरूकता आवश्यक है, वहीं इस संवेदनशील विषय को अपने स्वार्थ हेतु प्रयोग कर देश का अपमान व राजनीतिक लाभ लेने की मंशा से कार्य कर रहे लोगों से सावधान रहने की आवश्यकता है। ■

(लेखिका अभाविप की राष्ट्रीय छात्रा प्रमुख हैं।)

मणिपुर, पश्चिम बंगाल, राजस्थान में यौन दुर्व्यवहार के मामले निंदनीय

कठोर कार्रवाई करे सरकार : अभाविप

मणिपुर, पश्चिम बंगाल, राजस्थान सहित देश के विभिन्न हिस्सों में महिलाओं के विरुद्ध हो रही यौन दुर्व्यवहार की घटनाओं की कड़ी भर्त्सना करते हुए अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) ने ऐसे मामलों में दोषी पाए जाने वाले लोगों के विरुद्ध कड़ी कार्रवाई करने की मांग की है।

अभाविप ने कहा है कि मणिपुर में हिंसक स्थिति को सामान्य करने निमित्त हर संभव प्रयास किए जाने चाहिए। वर्तमान में राजस्थान, पश्चिम बंगाल, झारखंड सहित कई राज्यों में महिलाओं के साथ लगातार बढ़ रहे यौन दुर्व्यवहार के मामले अत्यंत शर्मनाक हैं। महिलाओं के विरुद्ध ऐसे अपराधों की घटनाओं को रोकने लिए केन्द्र तथा राज्य सरकारों द्वारा कठोरतम तथा प्रभावी कदम उठाए जाने चाहिए।

अभाविप की राष्ट्रीय मंत्री अंकिता पवार के अनुसार मणिपुर, पश्चिम बंगाल, राजस्थान में हिंसा तथा महिलाओं के साथ अपराध व यौन दुर्व्यवहार की घटनाएं अत्यंत निंदनीय व चिंताजनक हैं। सभ्य राष्ट्र व समाज में हिंसा तथा अपराध के लिए कोई स्थान नहीं है। राजस्थान से लगातार महिलाओं के साथ जघन्य अपराध एवं गैंगरेप जैसे मामले सामने आ रहे हैं। ऐसे मामलों में बिना किसी राजनीति के कठोरतम कार्रवाई होनी चाहिए तथा अपराधियों को कड़ा दंड मिलना ही चाहिए।

अभाविप का मानना है कि हाल ही में जिस प्रकार से मणिपुर, पश्चिम बंगाल, राजस्थान जैसे राज्यों में महिलाओं के साथ लगातार कई घटनाएं व हिंसा हुई है, वह अत्यंत शर्मनाक व चिंताजनक है।

अभाविप सरकार से ऐसे मामलों में सख्ती से निपटे जाने की मांग करती है। अभाविप समाज से यह आह्वान करती है कि अपराध तथा हिंसा रोकने के लिए समाज स्तर पर प्रभावी कदम उठाने के लिए प्रत्येक नागरिक अपनी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करते हुए आगे आएं, जिससे ऐसी घटनाओं को रोका जा सके। ■

(राष्ट्रीय छात्र शक्ति टीम)

रंग लाए अभाविप के प्रयास

विश्वविद्यालय छात्र संघ चुनाव के लिए केंद्रीय चुनाव समिति का गठन

दिल्ली विश्वविद्यालय में छात्रसंघ चुनाव की तैयारियां प्रारम्भ हो चुकी है। लगभग चार वर्ष बाद होने जा रहे छात्र संघ चुनाव को लेकर विश्वविद्यालय प्रशासन ने केंद्रीय समिति का गठन कर दिया है और यही समिति योजनाबद्ध ढंग से चुनाव संपन्न कराएगी। विश्वविद्यालय प्रशासन द्वारा चुनाव सम्बन्धी केंद्रीय समिति का गठन किये जाने के निर्णय का अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) ने स्वागत किया है।

अभाविप लम्बे समय से छात्रसंघ चुनाव कराने की मांग को लेकर संघर्ष कर रही थी। गत जुलाई माह में अभाविप ने छात्र संघ चुनाव की मांग करते हुए बड़ा प्रदर्शन भी किया। इसके बाद विश्वविद्यालय प्रशासन ने इसी वर्ष सितम्बर माह तक चुनाव संपन्न कराने का आश्वासन दिया था। गत 2 अगस्त को चुनाव की केंद्रीय समिति की घोषणा होने के साथ ही दिल्ली विश्वविद्यालय छात्रसंघ चुनावों पर मुहर लग गयी है।

2019 के बाद नहीं हुआ छात्रसंघ चुनाव

दिल्ली विश्वविद्यालय प्रशासन ने 2019 में छात्रसंघ चुनाव कराए थे। उसके बाद कोरोना महामारी के कारण छात्रसंघ चुनाव नहीं कराए गए। गत वर्ष अकादमिक कैलेंडर सुचारु रूप से न चलने के कारण छात्र संघ चुनाव नहीं हुए। लेकिन वर्तमान सत्र में दिल्ली विश्वविद्यालय प्रशासन ने अकादमिक कैलेंडर को सुधारते हुए सीयूईटी परीक्षा के पश्चात प्रवेश प्रक्रिया सही समय पर प्रारंभ कर दी और फिर 1 अगस्त को स्नातक की पहली सूची जारी कर दी गयी। उम्मीद की जा रही है कि 17 अगस्त को परास्नातक की पहली सूची जारी हो जाएगी। लेकिन अभाविप लगातार विश्वविद्यालय प्रशासन से छात्र संघ चुनाव कराने की मांग कर रहा था और गत माह इस सम्बन्ध में विश्वविद्यालय प्रशासन को ज्ञापन भी दिया गया। इसके अलावा दिल्ली विश्वविद्यालय के कला संकाय में हुए आंदोलन के माध्यम से भी कुलानुशासक से छात्र संघ चुनाव कराने की मांग की गयी थी। कुलानुशासक ने आश्वासन दिया था कि छात्र संघ चुनाव इसी वर्ष सितम्बर माह तक संपन्न कराए जाएंगे।

विश्वविद्यालय द्वारा गत 2 अगस्त को छात्रसंघ चुनाव सम्बन्धी समिति के गठन की सूचना जारी होने के साथ ही अभाविप की मांगों पर मोहर लग गई। पांच सदस्यीय चुनाव समिति के अलावा डीयू प्रशासन ने छात्र संघ चुनावों के लिए सभी महाविद्यालयों के प्राचार्य एवं संस्थानों के अध्यक्ष को चुनाव अधिकारी के रूप में नियुक्त किया है। यह चुनाव अधिकारी छात्र संघ के पदाधिकारियों सहित केंद्रीय पार्षदों का चुनाव संपन्न कराएंगे।

अभाविप दिल्ली प्रांत के मंत्री हर्ष अत्री के अनुसार दिल्ली विश्वविद्यालय में छात्रसंघ चुनाव का होना विश्वविद्यालय एवं छात्रों के लिए हितकर है। यह चुनाव डीयू के छात्रों का विश्वविद्यालय स्तर पर प्रतिनिधित्व प्रदान करने का काम करेगा। दिल्ली में छात्र संघ चुनाव का होना अभाविप के आंदोलनों एवं अथक प्रयास का परिणाम है। अभाविप आगामी छात्र संघ चुनाव में जीत हासिल कर पुनः नवीन कीर्तिमान स्थापित करेगा। ■

(राष्ट्रीय छात्र शक्ति टीम)

दरभंगा में सर्जना निखार शिविर का आयोजन

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) बिहार प्रांत की दरभंगा इकाई ने गत 6 जून से 5 जुलाई तक सर्जना निखार शिविर का आयोजन किया। सर्जना निखार शिविर के माध्यम से प्रतिवर्ष सैकड़ों छात्राओं की प्रतिभा को निखारा जाता है, साथ ही उसे स्वरोजगार से जोड़े जाने का काम भी किया जाता है। पिछले 17 वर्षों से आयोजित किए जा रहे सर्जना निखार शिविर के माध्यम से अब तक सात हजार से अधिक छात्राओं व गृहणियों को प्रशिक्षित किया जा चुका है।

दरभंगा में ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय में आयोजित समापन समारोह में सर्जना निखार शिविर पर विषय प्रवेश नगर मंत्री अमित शुक्ल ने किया। समारोह में कामेश्वर सिंह संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति शशिनाथ झा ने अभाविप द्वारा चलाए जा रहे सर्जना निखार शिविर की सराहना करते हुए कहा कि अभाविप द्वारा 17 वर्षों से आयोजित किए जा रहे कार्यक्रम अत्यंत प्रशंसनीय है। आज के समय में स्वरोजगार स्वावलंबन पर बात हो रही है और इसका जीवंत उदाहरण सर्जना निखार शिविर है।

समारोह में ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय के कुलसचिव कुमार पंडित ने बताया कि अभाविप का यह अद्भुत कार्यक्रम काफी सराहनीय है। समाज की महिलाओं का कौशल विकास अगर होता हैं तो अभाविप का ध्येय राष्ट्र पुनर्निर्माण को पूरा किया जा सकता है। कारण यह है कि प्रत्येक व्यक्ति के जीवन को संवारने का कार्य एक स्त्री ही करती है। इसलिए उनका कौशल विकास होना ही चाहिए तभी वह हम सभी को मजबूत कर सकती है, जिससे हम आगे चलकर राष्ट्र हित एवं समाज हित में अपना योगदान दे सकते हैं।

अभाविप बिहार-झारखंड के क्षेत्रीय संगठन मंत्री निखिल रंजन ने बताया कि भारत की संस्कृति में प्रारंभ से ही स्त्रियों के प्रति अत्यंत आदरणीय दृष्टिकोण रहा है। पुरातन काल से ही स्त्रियों का जीवन मूल्य अत्यधिक पवित्र एवं पुनीत समझा जाता रहा है। आज पाश्चात्य सभ्यता में स्त्रियों के बारे में अलग-अलग तर्क प्रस्तुत किए जाते हैं और कोई उन्हें आधी आबादी बताता है। इसके विपरीत भारतीय संस्कृति में उनके बिना अस्तित्व ही नहीं रहेगा ऐसा माना जाता है। हमारे देश की स्त्रियां समाज जीवन के जिस क्षेत्र में जब-जब कुछ जरूरत पड़ी तो खुलकर सामने आई। कभी झांसी की रानी के रूप में तो कभी पद्मावती तो कभी दुर्गावती तो कभी जीजाबाई बनकर। अभाविप का यह सर्जना निखार शिविर वैसी ही स्त्रियों की तरह उनके अंदर छुपे हुए कौशल को निकालकर बाहर लाने के लिए किया जाता है। उन्होंने छात्राओं से आज के युग में सोशल मीडिया के बढ़ते प्रभाव को देखते हुए उनसे आग्रह किया कि लोगों को रील लाइफ से निकलकर रियल लाइफ में आना पड़ेगा, तभी कोई बड़ा कार्य कर सकेंगे।

प्रदेश सह मंत्री उत्सव परासर ने कार्यक्रम में हिस्सा लेने वाली सभी छात्राओं की प्रशंसा करते हुए बताया कि सर्जना निखार शिविर के 17 वर्षों में अभी तक 7000 से अधिक छात्रा एवम गृहिणी प्रशिक्षित हुई है और 800 से अधिक आत्मनिर्भर बनी है। ■

(राष्ट्रीय छात्र शक्ति टीम)

"मेरी माटी-मेरा देश"

राष्ट्रगौरव को बढ़ाने वाले आजादी के अमृत महोत्सव में देश की स्वतंत्रता के लिए अपनी जान न्यौछावर करने वाले वीर स्वतंत्रता सेनानियों को श्रद्धांजलि देने के लिए 9 अगस्त से लेकर 30 अगस्त तक "मेरी माटी-मेरा देश" अभियान का आयोजन किया जा रहा है। "मेरी माटी-मेरा देश" अभियान के माध्यम से आजादी के अमृत महोत्सव का समापन भी होगा। अभियान का उद्देश्य उन वीर स्वतंत्रता सेनानियों और वीरों को नमन करना है, जिन्होंने देश के लिए अपना जीवन बलिदान कर दिया। अभियान में स्वतंत्रता सेनानियों और सुरक्षाबलों को समर्पित शिलाफलकम (स्मारक पट्टिका) की स्थापना जैसे कार्यक्रमों के साथ-साथ पंच प्रण संकल्प, वसुधा वंदन, वीरों का वंदन जैसी पहल शामिल होंगी, जो वीरों के वीरतापूर्ण बलिदानों को नमन करेंगी। अभियान की घोषणा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपने मन की बात कार्यक्रम में की थी।

"मेरी माटी-मेरा देश" अभियान के विषय में विस्तार से जानकारी देते हुए संस्कृति मंत्रालय ने बताया कि आजादी के अमृत महोत्सव का आरम्भ 12 मार्च 2021 को हुआ था। अमृत महोत्सव में देश में आयोजित लगभग दो लाख कार्यक्रमों में भारी जन भागीदारी रही। देश में अब "मेरी माटी-मेरा देश" अभियान के माध्यम से वीर सपूतों को श्रद्धांजलि देने का अभियान 9 अगस्त से 30 अगस्त तक चलेगा। अभियान में गांव से लेकर ब्लॉक स्तर, स्थानीय शहरी निकायों के साथ ही राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया जाएगा। अभियान का समापन राजधानी दिल्ली के कर्तव्य पथ पर होगा, जहां देशभर की पंचायतों से लाई गई मिट्टी से 'अमृत वाटिका' बनाई जाएगी। यह वाटिका भारत की स्वतंत्रता, एकता और अखंडता में महत्वपूर्ण योगदान देने वाले सेनानियों एवं वीर नायकों के लिए अमृत महोत्सव के स्मारक का रूप लेगी।

अभियान के दौरान गांव में मौजूद तालाबों के संरक्षण के लिए उसके किनारे पर शहीदों के स्मारक का निर्माण किया जाएगा और ग्राम पंचायत में वीरांगनाओं की स्मृति में स्मारक पट्टिका लगाई जाएगी। स्मारक पट्टिका में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के संदेश के साथ देश के लिए प्राण देने वाले स्थानीय लोगों के नाम अंकित होंगे। यह पट्टिकाएं जल निकायों, पंचायत कार्यालयों और स्कूलों के निकट लगाई जाएंगी। इसके अलावा गांव, पंचायत और क्षेत्र स्तर पर पृथ्वी की सुरक्षा के लिए 75 स्वदेशी पौधों का रोपण भी किया जाएगा।

अभियान के दौरान देश में आयोजित होने वाले कार्यक्रमों में गुलामी की सोच से मुक्ति, विकसित भारत, एकता और एक जुटता, विरासत पर गर्व और नागरिकों के लिए कर्तव्य पालन जैसे पांच प्रण लिए जाएंगे। अभियान के समापन अवसर पर अमृत कलश यात्रा निकाली जाएगी। अमृत कलश यात्रा द्वारा देश के अलग-अलग हिस्सों से 7500 कलश में लाई जाने वाली मिट्टी एवं पौधों से राष्ट्रीय युद्ध समारक के निकट अमृत वाटिका का निर्माण किया जाएगा। यह अमृत वाटिका 'एक भारत-श्रेष्ठ भारत' का भव्य प्रतीक बनेगी। अभियान का समापन 30 अगस्त को विभिन्न गणमान्य लोगों की उपस्थिति में दिल्ली में होगा।

(राष्ट्रीय छात्र शक्ति टीम)

प्रिय मित्रों !

शिक्षा - क्षेत्र की प्रतिनिधि - पत्रिका के रूप में 'राष्ट्रीय छात्रशक्ति' अगस्त 2023 अंक आपके समक्ष प्रस्तुत हैं। यह अंक महत्वूर्ण लेख एवं विभिन्न समसामयिक घटनाक्रमों व खबरों को समाहित किए हुए हैं। आशा है, यह अंक आपके आवश्यकताओं के अनुरूप उपादेय साबित होगा। कृपया 'राष्ट्रीय छात्रशक्ति' से संबंधित अपने सुझाव व विचार हमें नीचे दिए गए संपादकीय कार्यालय के पते अथवा ई - मेल पर अवश्य भेजें : -

'राष्ट्रीय छात्रशक्ति'
26, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग,
नयी दिल्ली - 110002.
फोन : 011-23216298
www.chhatrashakti.in
rashtriyachhatrashakti.abvp@gmail.com
www.facebook.com/Rchhatrashakti
www.twitter.com/Rchhatrashakti
www.instagram.com/ Rchhatrashakti

वैदिककालीन साहिबी नदी को पुनर्जीवित करने में जुटा शोध आयाम

देश की राजधानी दिल्ली में रहने वाले लोग यमुना को सबसे प्रमुख नदी मानते है और अपनी विशालता के कारण यमुना प्रमुख नदी है भी। लोग व नीति निर्माता यमुना नदी की सफाई व संरक्षण की चिंता में हमेशा रहते हैं, परंतु कुछ लोगों को छोड़कर शायद ही लोगों को यह मालूम होगा कि दिल्ली में वैदिक सभ्यता जितनी पुरानी 'साहिबी नदी' भी मौजूद है। इस नदी के आसपास 'गेरू रंगों की बर्तन की संस्कृति' के साक्ष्य पुरातत्व सर्वेक्षण को मिले है। यह संस्कृति हड़प्पा सभ्यता के समय की संस्कृति थी। लेकिन अब यह वैदिक नदी एक गंदे नाले में बदल चुकी है।

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) आयाम शोध द्वारा साहिबी नदी को पुनर्जीवित करने को लेकर गत 15 जुलाई को जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के अंतर्राष्ट्रीय अध्ययन विभाग में "नदी साहिबीः एक विलुप्त नदी के जीर्णोद्धार का एक प्रयास" विषय पर पैनल चर्चा का आयोजन किया गया। चर्चा में प्रो. पी.के. जोशी (जेएनयू), डॉ. अमित कुमार मिश्रा (जेएनयू), डॉ. चंद्र कुमार सिंह (टेरी यूनिवर्सिटी), डॉ. अश्वनी कुमार तिवारी (जेएनयू) ने मुख्य वक्ता के रूप में हिस्सा लिया। परिचर्चा में लगभग सौ प्रतिभागी मौजूद रहे।

पैनल चर्चा में प्रो. पी. के. जोशी ने वैदिक नदियों के जीर्णोद्धार के महत्व पर जोर दिया क्योंकि इससे अंतर्देशीय जल पर्यटन में भी वृद्धि होगी। उन्होंने कहा कि प्रशासकों के मध्य साहिबी नदी को लेकर जागरूकता बढ़ाने की और अधिक आवश्यकता है, हालांकि उन्होंने वैदिक नदियों के बढ़ते क्षरण और पुनर्स्थापन के संबंध में पिछले कुछ समय में प्रशासकों के बीच बढ़ती जागरूकता पर भी ध्यान केंद्रित किया। चर्चा के दौरान डॉ. अमित कुमार मिश्रा ने साहिबी नदी के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि यह एक वैदिक नदी है और इस नदी की स्थिति के बारे में नीति निर्माताओं और साथ ही साथ नागरिकों को भी जागरूक करने के लिए और अधिक शोध किए जाने की आवश्यकता है। उन्होंने बताया कि साहिबी नदी प्राचीन वैदिक एवं विलुप्त नदी सरस्वती नदी की एक सहायक नदी है। इसी तरह डॉ. अश्वनी तिवारी ने कहा कि साहिबी जैसी क्षरण झेल रही नदियों के पुनर्जीवन की दिशा में काम करने के लिए जमीनी स्तर के हितधारकों एवं आम जन-समुदायों को शामिल करना बहुत अधिक महत्वपूर्ण है।

पैनल चर्चा के बाद साहिबी नदी पर एक रिपोर्ट पुस्तिका का विमोचन किया गया। यह रिपोर्ट पुस्तिका पिछले एक वर्ष से साहिबी नदी में हो रहे क्षरण और उसकी बहाली के संभावित तरीकों पर आयाम शोध टीम द्वारा आयोजित निरंतर शोध और चर्चाओं का परिणाम है। रिपोर्ट में साहिबी नदी में हुए प्रदूषण और अवैध निर्माणों के बारे में वैज्ञानिक अध्ययन के आधार पर आंकड़े दिए गए हैं। राजस्थान के

सीकर जिले से निकलकर हरियाणा में रेवाड़ी और गुड़गांव के रास्ते नजफगढ़ से दिल्ली में प्रवेश करने वाली साहिबी नदी यमुना के प्रदूषण का एक बहुत बड़ा कारण है।

शोध दिल्ली प्रान्त के पूर्व संयोजक प्रशांत शाही ने विमोचित पुस्तिका के बारे में बताया कि पुस्तिका में शोध दिल्ली द्वारा साहिबी नदी को लेकर अबतक किये गए प्रयासों का एक संक्षिप्त लेखा-जोखा है। भविष्य में भी शोध अपनी इस पहल को जारी रखेगा और साहिबी के पुनर्जीवन के लिए अकादमिक और नीतिगत प्रयास करता रहेगा। शोध दिल्ली की संयोजक श्रेया मलिक के अनुसार सामान्यतयः नदी पुनर्जीवन विषय पर चर्चाएं बड़ी नदियों पर ही केंद्रित होती हैं। अब समय आ गया है कि हम छोटी नदियों पर ध्यान केंद्रित करना शुरू करें जो कि बड़ी नदियों को बड़ा बनाती हैं। ■

(राष्ट्रीय छात्र शक्ति टीम)

राष्ट्रीय विद्यार्थी दिवस पर विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) अपनी स्थापना के 75 वें वर्ष में प्रवेश कर चुकी है। इस अवसर पर देश भर में विद्यार्थी परिषद अपना अमृत महोत्सव मना रही है। अभाविप द्वारा राष्ट्रीय विद्यार्थी दिवस (9 जुलाई) के उपलक्ष्य पर देश भर में प्रतिभा सम्मान समारोह,मैराथन, भाषण प्रतियोगिता, खेल प्रतियोगिता, संगोष्ठी, सेमिनार, पौधारोपण जैसे विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

अभाविप अवध द्वारा लखनऊ विश्वविद्यालय के मालवीय सभागार में "अभाविप 75 : राष्ट्र केन्द्रित छात्र शक्ति की गौरव गाथा" विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी को संबोधित करते हुए अभाविप के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. राजशरण शाही ने कहा कि छात्र कल का नहीं, आज का नागरिक है। विद्यार्थी परिषद ने युवाओं का सफल नियोजन करके कश्मीर समस्या, बांग्लादेशी घुसपैठ, शिक्षा के बाजारीकरण आदि मुद्दों पर नेतृत्व किया है।

डॉ. शाही ने अपने संबोधन के दौरान विद्यार्थी परिषद की 75 वर्ष की यात्रा पर विस्तृत प्रकाश डालते हुए कहा कि अमृत काल के समय राष्ट्र के कर्तव्यबोध के जागरण की आवश्यकता है। जल, जंगल, जमीन, जन, जानवर के लिए हमारा युवा अपना दायित्व समझने वाला होना चाहिए। युवा उद्यमिता के क्षेत्र में आगे आएं और अपनी सफल उपस्थित दर्ज करें। विद्यार्थी परिषद जो कि विश्व का सबसे बड़ा छात्र संगठन है, वह विद्यार्थियों के प्रति अपने दायित्वों का निर्वहन लगातार करता आ रहा है।

कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि व भारतीय रेल एवं यातायात अधिकारी सिद्धार्थ वर्मा ने कहा कि विद्यार्थियों, शिक्षकों और शिक्षण संस्थानों को सांस्कृतिक पुनर्जागरण के लिए सतत प्रयास करना चाहिए। आने वाला दशक सांस्कृतिक महत्व और सांस्कृतिक परिवेश के लिए भारत को भारतीयता के रूप जानने का सर्वश्रेष्ठ अवसर बन सकता है।

अपने संबोधन में अभाविप के राष्ट्रीय महामंत्री याज्ञवल्क्य शुक्ल ने सभी छात्रों को राष्ट्रीय विद्यार्थी दिवस की शुभकामना देते हुए कहा कि विद्यार्थी परिषद परिवर्तन का सूचक है। अभाविप समाज केन्दित व्यवस्था पर कार्य करती है। आपातकाल के बाद चुनाव होने के बाद सत्तारूढ़ दल ने विद्यार्थी परिषद को सत्ता में शामिल होने का आमंत्रण दिया। परंतु अभाविप ने अपनी दलगत भावना के ऊपर कार्य करने की अवधारणा को अक्षुण्ण रखते हुए शामिल होने से इंकार कर दिया। विद्यार्थी परिषद सिर्फ समस्याएं नहीं उठाती, बल्कि उसके समाधान की दिशा में सतत कार्यरत रहती है। अभाविप ने छात्रशक्ति को राष्ट्रशक्ति के रूप में स्थापित करने का कार्य किया है। यह गौरव का क्षण है कि जब देश अपनी स्वतंत्रता के अमृत काल में प्रवेश कर रहा है, उसी समय विद्यार्थी परिषद भी अपने स्थापना के 75 वें वर्ष में प्रवेश कर रही है।

उधर कानपुर में आयोजित संगोष्ठी को संबोधित करते हुए अभाविप के राष्ट्रीय संगठन मंत्री आशीष चौहान ने कहा कि राष्ट्रीय पुनर्निर्माण का लक्ष्य लेकर कार्य करने वाले अभाविप के समक्ष राष्ट्र की अवधारणा का चित्र स्पष्ट करना प्रमुख चुनौती थी। परंतु विद्यार्थी परिषद ने सांस्कृतिक राष्ट्र की अवधारणा पर आधारित भारत राष्ट्र का स्वरूप देश की युवा पीढ़ी के समक्ष प्रस्तुत करने के साथ ही अपनी विचारधारा का स्पष्ट चित्र रेखांकित करते हुए छात्र-छात्राओं के बीच संगठनात्मक ढांचे का विस्तार किया।

विगत सात दशकों की इस यात्रा में विद्यार्थी परिषद ने अपने मूल उद्देश्य राष्ट्र के पुनर्निर्माण की संकल्पना व विचार की प्रतिबद्धता के अनुरूप गतिविधियों का क्रम जारी रखा है। किसी भी देश की अस्मिता एवं पहचान, वहां के छात्र-छात्राओं की प्राथमिकता का विषय होना चाहिए। यह भाव जगाने का कार्य विद्यार्थी परिषद द्वारा किया गया है। ■

(राष्ट्रीय छात्र शक्ति टीम)

राष्ट्रीय विद्यार्थी दिवस की झलकियां

RNI NO.: DELBIL/2017/73636 POST OFFICE: NDGPO, NEW DELHI

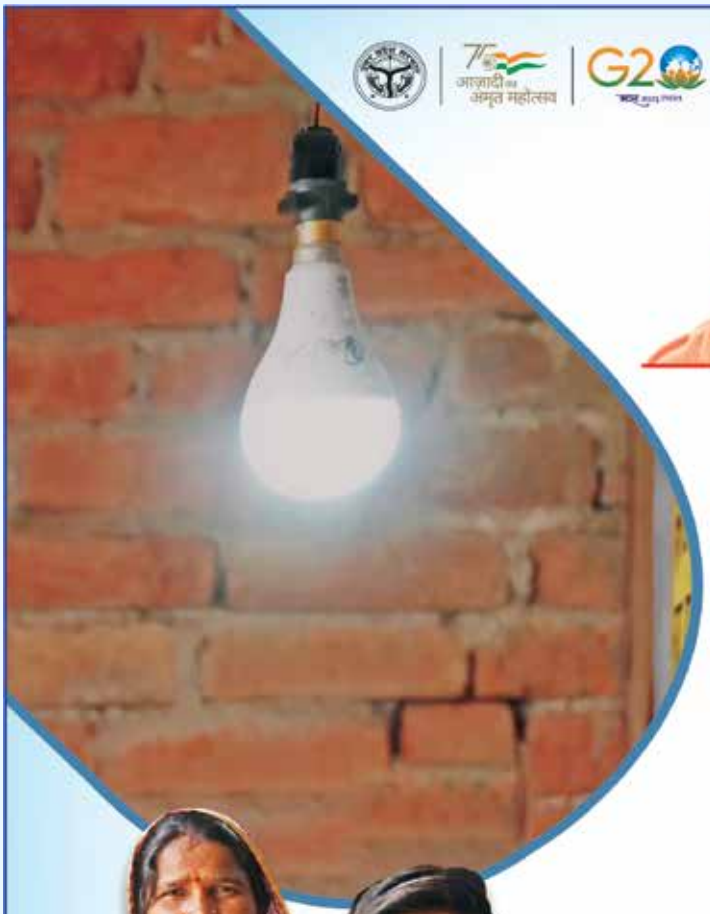

पॉवर फॉर ऑल के तहत 1.58 करोड़ घरों को नि:शुल्क बिजली कनेक्शन

डबल इंजन की सरकार
विकास की दोगुनी रफ़्तार

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उत्तर प्रदेश